।। श्री सुरभ्यै नमः।।

मासिक

कामधेनु कल्याण

पत्रिका

अगस्त, 2026 (वर्ष : 03, अंक : 05)

परम श्रध्देय गोऋषि स्वामी

श्री दत्तशराणानंदजी महाराजश्री

की सत् प्रेरणा से

अर्बुदारण्य की पावन भूमि पर सहस्त्रों गोमाताओं के मध्य

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा प्रायोजित

श्री सुरभि हरिहर चातुर्मास

आराधना महोत्सव

29 जुलाई से 26 सितम्बर 2026

पावन सानिध्य

अनंत श्री विभूषित पश्चिमाम्नाय सामवेदीय

द्वारका शारदापीठाधीश्वर प. पू. जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी

श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज

संपर्क सूत्र : 7742093179, 7742093200, 7073000108, 7073000104, 9760635735

पधारिए, आपका हार्दिक स्वागत है

Website: www.godhampathmeda.org
Email: k.k.p.pathmeda@gmail.com

अभिनव ब्रजमंडल मनोरमा गोलोकतीर्थ अर्बुदारण्य नन्दगांव, केसुआ, रेवदर, सिरोही (राज.)

(सनातन संस्कृति के सूर्य का गोलोक आगमनः चातुर्मास महामहोत्सव)

हे मेरे प्रिय आत्मरूप गौभक्तों !

आप सभी को मेरा बहुत-बहुत मंगलमय शुभ आशीर्वाद और बधाई। आज मेरा हृदय अतीव आनंद और कृतज्ञता से भरा हुआ है। आदि गुरु भगवान शंकराचार्य जी की पावन परंपरा सनातन हिंदू धर्म का प्राण है। राष्ट्र की आध्यात्मिक चेतना को अक्षुण्ण रखने के लिए पूज्य शंकराचार्य पीठ सदैव सूर्य के समान प्रकाशमान रहे हैं। हिंदू सनातन संस्कृति में जगद्गुरु शंकराचार्य जी का स्थान सर्वोपरि है। वे साक्षात भगवान शिव के स्वरूप हैं, जो धरा पर धर्म की रक्षा, वेदों के पुनरुत्थान और मानवता के कल्याण के लिए हिन्दुओं मार्गदर्शित करते हैं।

यह मेरा परम सौभाग्य है कि इस बार मेरे ही एक परम पवित्र प्रकल्प—अभिनव ब्रजमंडल श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ, नंदगांव (श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा) की पावन धरा पर साक्षात धर्म की जीवंत मूर्ति का शुभागमन हो रहा है। शारदा पीठाधीश्वर पूज्यपाद अनंत श्रीविभूषित स्वामी श्री सदानंद सरस्वती जी महाराज का इस दिव्य क्षेत्र में प्रथम बार ऐतिहासिक चातुर्मास व्रत आयोजित हो रहा है। अभिनव ब्रज की माटी, गोमाता का सान्निध्य और साक्षात शंकराचार्य जी की तपस्या का यह त्रिवेणी संगम अद्भुत है। चातुर्मास की यह अवधि (दिनांक 29 जुलाई से 26 सितम्बर) केवल व्रत-नियम की नहीं, बल्कि अपनी सोई हुई आध्यात्मिक ऊर्जा को जगाने का महापर्व है। जब महापुरुष गोवंश के बीच बैठकर तप करते हैं, तो संपूर्ण ब्रह्मांड की दैवीय शक्तियां उस भूमि पर उतर आती हैं।

मैं, आपकी आदिमाता सुरभि, देश-विदेश के कोने-कोने में बसे अपने करोड़ों गोभक्तों, सनातन धर्मप्रेमियों और राष्ट्रभक्तों को वात्सल्यमयी आमंत्रण देती हूँ। आप सभी इस पावन चातुर्मास अवधि में अपनी व्यस्तताओं को त्यागकर, सपरिवार श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ, नंदगांव पधारें। आइए, पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्य जी के दर्शन-सत्संग का लाभ उठाएं और गोसेवा के इस महायज्ञ के साक्षी बनें। आपके कदम जब इस गोलोक की रज पर पड़ेंगे, तो आपका जीवन धन्य हो जाएगा।

तुम्हारी प्यारी माँ
सुरभि गोमाता

।। वन्दे धेनुमातरम् ।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्ष : 3

कामधेनु-कल्याण

अंक : 5

श्रावण मास कृष्ण पक्ष वि.सं. 2083 रा.शा: 1948 अगस्त -2026

1. **तीनों लोकों में शरण्या गोमाता हैं** - परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री 04
2. **श्री कामधेनु कृपा प्रसाद** - परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री 07
3. **गाय की महत्ता और आवश्यकता** - संकलित 09
4. **ठाकुरजी कब आओगे** - भगवत प्रेरणा से 11
5. **मानव देह की दुर्लभता** - संकलित 14
6. **श्री मदभागवत कथा** - पूज्य द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज 15
7. **श्री राम कथा** - पूज्य आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज 17
8. **श्री शिव महापुराण कथा** - पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज 19
9. **सनातन धर्म** - अम्बा लाल सुथार, सम्पादक 21
10. **संस्था समाचार** - जुलाई माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण 23

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,
त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041

Mob. No. 9828052638

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक

अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क-2100 रुपये मात्र

मूल्य:20 रुपये

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

तीनों लोकों में शरण्या गोमाता है

.........पिछले अंक से आगे

...........यह इन सभी पद्धतियों का एक बहुत पवित्र लक्ष्य रहा कि भाई, उन सबको मिलाकर हम सनातन संस्कृति या सनातन धर्म अथवा मानव धर्म कहते हैं। मानव धर्म अथवा धर्म शब्द कोई एकांती नहीं है, संपूर्ण मनुष्य के जीवन जीने की कला का नाम धर्म है. और धर्म का मुख्य आधार, योग का जो प्रथम अंग है यम, वह है. पाँच यम आपने सुने होंगे, इतने बढ़िया हैं -

अहिंसा: मन, वचन और कर्म से किसी भी प्राणी को कष्ट न पहुँचाना।

सत्य: हमेशा सच्चाई का पालन करना और जैसा देखा या सुना हो वैसा ही सही बोलना।

अस्तेय: चोरी न करना, अर्थात् किसी दूसरे की वस्तु या अधिकार को गलत तरीके से न लेना।

ब्रह्मचर्य: अपनी इंद्रियों और ऊर्जा पर नियंत्रण रखना और वासनाओं से दूर रहना।

5. **अपरिग्रह:** आवश्यकता से अधिक धन, वस्तुओं या विचारों का संचय (इकट्ठा) न करना। भौतिक चीजों के प्रति अत्यधिक मोह या आसक्ति को त्यागना।

अगर इन यमों का पालन मानव जाति इस पृथ्वी पर करने लगे, हम सभी करने लगे तो बताएं कि क्या कोई सरकार की, कोई न्यायालय की, कोई पुलिस की, कोई विनाश करने वाले अस्त्रों की, किसी ऐसी चीजों की जरूरत पड़ेगी? नहीं पड़ सकती है? ये जो यम हैं, ये यम जो सनातन संस्कृति की दो धाराएं जो हिन्दू धर्म से अलग हुई जैन और बौद्ध इनको लेकर उन्होंने संसार भर में इन पांचों यम पर, एक ऐसी संस्कृति, एक ऐसी व्यवस्था का प्रचार पूरे संसार में किया, बहुत से अच्छे-अच्छे लोग भगवान बुद्ध और भवान महावीर के अनुयायी बन गए और अभी हमने सुना कि बहुत से ऐसे देश हैं वहाँ बुद्ध-ही बुद्ध रहते हैं। हिंदुओं से अलग होकर ही बुद्ध बने हैं। हिंदू की ही एक शाखा है बुद्ध। बुद्ध नाम की संख्या से बहुत बड़े विस्तार से पृथ्वी पर रह रहा है। धीरे-धीरे उसमें कुछ कमी आ गई। अभी आपने बताया कि मैं इस तरह होकर तैयार हुआ हूँ तो बड़ी प्रसन्नता हुई कि ये सब पद्धतियाँ होते हुए भी इन पद्धतियों के जानकार नहीं हैं।

ऐसे ही हमारे जो छः दर्शनों की पद्धतियाँ हैं। 1. सांख्य दर्शन- महर्षि कपिल 2. योग दर्शन- महर्षि पतंजलि 3. न्याय दर्शन- महर्षि गोतम 4. वैशेषिक दर्शन- महर्षि कणाद 5. पूर्व मीमांसा- महर्षि जैमिनी तथा 6. उत्तर मीमांसा या वेदान्त दर्शन- महर्षि बादरायण (वेदव्यास)। जैसे योग दर्शन महर्षि पतंजलि ने बनाया ऐसा कहते हैं, पर वास्तव में यह दर्शन उसके पहले भी इसी तरह मौजूद रहा है। जबसे यह सृष्टि रही है तबसे यह मौजूद रहा है। दर्शन सनातन है, दर्शन में कभी भी परिवर्तन नहीं होता, बदलता नहीं है एक ही होता है। उसके जो सिद्धांत होते हैं, ये पंच यम है, ये हर युग, हर कल्प में, हर परिस्थिति में, आप कैसे भी हो। आप मानव हो तो मानव होने के नाते आपके लिए ये आवश्यक हैं। इनके बिना तो आप मानव ही नहीं रहोगे और मानव होने के लिए सबसे पहले अपने को अपनी तरफ देखना पड़ेगा। ये सब बातें हम सुनते हैं, पढ़ते हैं, अच्छी लगती हैं। कभी-कभी शिविरों में बैठते हैं तो कि हाँ हम भी योगी हो जाएं, इस तरह की पात्रता

प्राप्त कर लें, इसके लिये प्रयास भी करते हैं, फिर बीच-बीच में छूट जाता है, इन्होंने कहा न कि पहले योग किया और बीच में छूट गया। ये जो अनियमितताएं हैं, अभी मैं महाराज जी से पूछ रहा था कि क्या शिविर में भी आपके सब योगाभ्यासी यूँ बैठते थे? बोले नहीं-नहीं, अधिकतर तो ये प्रवचन सुनने आए हैं। देखो अभी कैसी-कैसी क्रिया कर रहे थे, बड़ी सुंदर क्रिया। इसमें क्या कितना समाया हुआ है? इसमें ये भी निर्देश दिये जा रहे हैं कि आप कितनी-कितनी दूर बैठने चाहिए. वैसे देखो हाथ टकराते हैं। तो ऐसे आपको दूर-दूर बैठने हेतु कहा होगा। अगर हमको धर्म लाभ लेना है तो निर्देशों की पालना करनी होगी। लोग कहीं घूमने जाते हें तो कहते हैं कि हमने आज धर्म लाभ लिया। हमारे यहाँ सांचोर में तो विशेष कहते हैं, क्योंकि हमारे यहाँ जैन, बुद्ध आदि खूब आचार्य आते हैं, तो लोग प्रवचन सुनने जाते हैं तो फिर उनसे पूछते हैं कि कहाँ गए थे? तो बोलते हैं कि धर्म लाभ लेने गए थे।

अगर वास्तव में धर्म लाभ लेना हो, धर्म अभी बताया कि धर्म का मुख्य आधार पंच यम है तो इन पांचों यमों का पालन करें। पंच यमों को धारण करने के लिए जो हम असमर्थ, कमजोर पड़ रहे हैं, करना चाहते हुए भी कर नहीं पा रहे हैं। हम भी सब लोग बुद्धि से योग के बारे में बड़े बड़े प्रवचन दे देंगे क्योंकि योग के बारे पुस्तकों में तो खूब लिखा हुआ रहता है। भाषा तो हम भी जानते हैं, हिंदी जान लेते हैं, कुछ पुस्तकों में तो हिंदी में भी खूब अच्छा लिखा मिलता है, तो उससे कोई मतलब नहीं। बोल भी लेंगे, बोल भी अच्छा लेंगे, हमारे में पीड़ा भी होगी कि हम इस तरह हो जाएं, पर हो नहीं पा रहे हैं। यह असमर्थता है, हम लोगों में, किन में? साधकों में, जो आस्तिक है, जीवन को वास्तविक बनाना चाहते हैं, जो धर्म के प्रति, उस परंपरा के प्रति कुछ सजग हैं, जिस परंपरा में समग्र प्राणियों के लिये हित की, कल्याण की दृष्टि से सारी व्यवस्थाएं स्थापित की गई हैं, उस व्यवस्था के कुछ आनुवांशिक संस्कारों से संस्कारी लोग और कुछ भगवत अनुग्रहित लोग, ऐसी इच्छा चाह रहे हैं और ऐसे करोड़ों की संख्या में होंगे पृथ्वी पर, करोड़ों की संख्या में। फिर भी हम लोग असमर्थ हो रहे हैं। हम समर्थ होते हुए भी कर नहीं पा रहे हैं। हम ही इनके आचार्य हैं, हम कोई दूसरे थोड़े ही हैं, हम ही इस योग के आचार्य हैं। सारे संसार के लिये हम योग के आचार्य हैं। कारण शरीर में तो सब मौजूद है। हम कभी भी पृथ्वी पर रहे हैं तो हमारे जो पूर्वाचार्य थे उनसे हमने सीखा तो था ही।

हमारे शरीर में सत्संग आदि से संस्कार कहीं न कहीं से जा रहे हैं और वे इस शरीर में पड़े तो हैं ही। उनको उद्‌बोध करने के लिये दो साधन चाहिये-किसी भी माग्र से सफल हुआ साधक और अच्छे स्वस्थ तीनों शरीर। ये सब होते हुए भी हम धारण नहीं कर पा रहे हैं। स्थूल, सूक्ष्म और कारण ये तीनों शरीर अच्छे होने चाहिये। ये शरीर जिससे निर्मित होते हैं वह क्या है? वह आहार है, भोजन। हम तीनों शरीरों की अलग-अलग बात नहीं कर रहे हैं। वह भोजन हमें कहाँ से मिल रहा है? पृथ्वी से मिल रहा है। पृथ्वी एक प्राण युक्त, जैसे हम हैं ऐसे है। जैसे हम कुछ करते हैं तो उसमें कमी पड़ती है, ऐसे ही पृथ्वी हमें कुछ देती है तो उसकी सुव्यवस्था में कुछ कमी पड़ती है। उस कमी की पूर्ति आज के समय में कई तरह से हो रही है, लेकिन पहले यह प्राकृतिक रूप से होती थी। आहार के तीनों भागों से स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों शरीरों को पोषण मिलता है। जो आहार का स्थूल अंश है वह गंदगी के रूप में बाहर हो जाता है, मध्यम अंश है उससे मांस, रक्त, मज्जा और वीर्य आदि धातुएं बनती है तथा सूक्ष्म अंश ऊर्जा और विचार के स्तर तक परिवर्तित होकर सूक्ष्म शरीर का निर्माण करता है। जो हमारे स्थूल शरीर, को पोषण प्रदान करती है। आहार शुद्ध सात्विक

होगा तो ही तीनों शरीर स्वस्थ और सुव्यवस्थित रहेंगे। दर्शन के अंतर्गत जो अनेक तरह के साधन हैं चाहे किसी भी आचार्य ने कहीं भी कहे हैं, उस समय तो उसको ठीक समझ कर ही कहे हैं। क्योंकि जो दार्शनिक होगा वो झूठ नहीं बोलेगा। दार्शनिक उसी को कहेंगे जो सत्य को देखकर, सुनकर, अनुभव करके उतना ही बोले। वो उसने दर्शन किस पद्धति से किया वो अलग बात है। वो पी.एच.डी. और जाने क्या-क्या, उनका कार्य है, हमारा कार्य नहीं है।

तो वो वास्तव में अद्भुत बात है और सारी जो अद्भुत बातें है ये सब एक ही सनातन संस्कृति से है और उसी को हमने मानव संस्कृति या हिन्दू संस्कृति जो भी आप कह दें। यह जो मानव कल्याण के लिये ईश्वर से मिला हुआ सनातन प्रसाद है किसी व्यक्ति के द्वारा बनाया हुआ नहीं है। सौभाग्य की बात है पर यह आहार शुद्ध मिले कहाँ से? यह पृथ्वी, यह प्रकृति ऊर्जा से युक्त कैसे बनी रहे? वह परम्परा, वह प्रयोग, वह पदार्थ, वह ईश्वर का मंगलमय प्रसाद क्या है? वह प्रसाद गाय है।

आप योगी भी हैं और आयुर्वेद के आचार्य भी हैं। योग में और आयुर्वेद में पंचगव्य की जो शक्ति है वह इस रूप में सवीकार की गई है कि यह जो यह मस्तिष्क है यह तो विकसित होता ही है पर वास्तव में मानव जीवन जीने का जो विज्ञान है वह पैदा हो जाता है। उसे धारण करने में और समझने में कमजोर से कमजोर, असमर्थ से असमर्थ, हमने कहीं पढ़ा है कि तीनों लोकों में जितने शरण लेने योग्य जीव है उन सबमें श्रेष्ठ और सर्वोत्तम शरण गो की है। उन सभी स्थानों में श्रेष्ठ स्थान गो को दिया। यही कारण होगा जिससे हमारे सभी दार्शनिकों ने, ऋषियों ने, आचार्यो ने अपने जीवन में, अपनी व्यवस्था में, मानव जीवन की अपनी परम्परा में गो को बहुत बड़ा स्थान दे दिया जिससे हमारा और गो का स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों ही शरीरों से सम्बंध विभाजित रहा है। ईश्वर से हमें जिस रूप में यह प्राणी मिला है, यह साक्षात् भगवत् विग्रह है। हमारे यहाँ कहीं पशु आहार लिखना होता है तो भी उसे पौष्टिक आहार लिखते हैं कि कहीं भूल से भी गाय के लिये पशु शब्द न आ जाए। हमारे जितने भगवत आचार्य हैं, जितने देवता हैं उन सबको मिलाकर जो समष्टि विग्रह बनता है, उससे भी गाय को श्रेष्ठ कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

इस गो ने मानव संस्कृति को, हमारी मानव सभ्यता को, हमारी सनातन को सात्विक प्राणशक्ति प्रदान की है और इस गो के गव्य हैं वे हमारे जो सनातन पद्धतियों है- जिन्हें हम वेद, योग या अन्य जो है, वे इसी का दुग्ध है। केवल दुग्ध सफेद वाला ही नहीं होता है, ये वेद, योग, बोध, प्रेम भी इसी का दुग्ध है। यह अद्भुत प्राणी है, इसे "भगवत् विग्रह" मानी भगवान का विग्रह कहते हैं। बोले क्यों? जिसके द्वारा सबका परमार्थ होता है, सबका हित होता है- ''सर्वभूतहिते रता:'' उसे हम भगवान कहते हैं और गाय है जो सबका हित ही हित करती है, इसलिये यह भगवान है। हमारे ऋषियों ने गो को केवल एक प्राणी नहीं माना, बल्कि उसे "भगवत् विग्रह" के रूप में प्रतिष्ठित किया है। यह मान्यता केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि गहन आध्यात्मिक अनुभवों पर आधारित है। गोमाता में स्थूल, सूक्ष्म और कारण- तीनों स्तरों पर मनुष्य का संबंध जुड़ा हुआ है। वह न केवल शारीरिक पोषण देती है, बल्कि प्राणशक्ति, मानसिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति का भी आधार बनती है।

गोमाता के गव्य अमृतस्वरूप माने गये हैं। ये केवल शरीर को पुष्ट करने वाले पदार्थ ही नहीं है, बल्कि योग, ध्यान और साधना के मार्ग में सहायक दिव्य तत्व हैं। यही कारण है कि सनातन परंपराओं में गोगव्यों को विशेष स्थान दिया गया है। हम चाहकर भी योग की स्थिति को पाने में असमर्थ हैं उसका कारण गोगव्यों का सेवन नहीं करना है।............

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

महाविनाश से गो ही बचा सकती है

(गोभागवत कथा समापन के अवसर पर)

जगदीश्वर भगवान की जय! सत्य सनातन धर्म की जय! गोमाता की जय! सर्वेश्वर, सर्वसमर्थ, एक, अद्वितीय प्रभु गिरधर गोपाल, सर्व अन्तर्यामी हैं, वे सबके हृदय में विराजमान हैं उनका पावन स्मरण करते हुए, पूज्या गोमाता तथा उसके अखिल गोवंश के चरणों की वंदना करते हैं, व्यासजी के स्वरूप पूज्य व्यासजी महाराज श्रीमलूकपीठाधीश्वरजी के चरणों में प्रणाम, मंच पर विराजमान और मंच के सामने विराजमान सभी संतों को प्रणाम, यहाँ उपस्थित सभी धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यपरायण गोभक्त सज्जनों, माताओं, बहनों और बालकों आप सभी को सादर हरिस्मरण जय गोमाता, जय गोपाल!

गत सात दिनों से हमनें पूज्य व्यासजी महाराज के मुखारविन्द से वेदों, उपनिषदों, संहिताओं और अन्य तंत्रग्रन्थों, पुराणों, इतिहास आदि के माध्यम से यह ''गोभागवत कथामृत'' सुना। उससे ज्ञात हुआ कि पूज्या गोमाता, गोमाता का शरीर, उनका स्वरूप सब कुछ अलौकिक हैं। कभी तो वह भगवान श्री राधाकृष्ण के प्रेम के पुंज के रूप में प्रकट होती है, कभी भगवान ब्रह्माजी के तप का उद्वेग होने पर, अधिक तप होने पर, अतिरिक्त तप होने पर तप पुंज के रूप में प्रकट होती है, कभी भगवती जगदम्बा गौरी स्वयं गोमाता के रूप में आती है। इन सभी इतिहास, पुराण, वेद, उपनिषद्, सहिंताओं आदि के कथांकों से, आख्यानों से यह सिद्ध होता है कि गोमाता प्रकृति से अतीत किसी दिव्य और चिन्मय लोक का प्राणी है। इनको जो भी कहें हम, पर यह तीनों गुणों से अतीत है। रजो, तमो और सतो जो प्रकृति के ये तीन गुण हैं इन तीनों गुणों से अतीत है, त्रिगुणातीत है। वैसे भी अभी अन्त में हमने एक आख्यान सुना कि यह जो दुनिया, यह सृष्टि बहुत लम्बे काल से चल रही है फिर कल्प, महाकल्प, सर्ग-महासर्ग, प्रलय-महाप्रलय ये सब होते रहते हैं, इनमें अनेक बार ऐसी परिस्थितियाँ पैदा होती हैं जब यहाँ पृथ्वी की व्यवस्था, शासन की बागडोर कोई पथभ्रष्ट, अंहकारी, मोहग्रस्त व्याक्तियों के हाथों में आती है। तो वह प्राकृतिक, धर्मानुमोदित और भगवत प्रेरित गोपालन संस्कृति से विमुख हो जाते हैं। और जब-जब वे गोपालन संस्कृति से, गोपालन सभ्यता से विपरीत होते रहे हैं तब-तब ऐसी परिस्थितियाँ पैदा होती रही हैं कि यह प्रकृति उनका निर्वाह, उनका पोषण सब कुछ छोड़ देती है।

अन्तिम आख्यान से हमें ऐसा ज्ञात हुआ कि उस समय की जो शासन की प्रणाली थी, उसने सारी व्यवस्था कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा इन सब व्यवस्थाओं में से जो गो की प्रधानता थी वो हटा दी। गाय को अलग कर दिया, गाय की उपेक्षा कर दी, गाय का तिरस्कार कर दिया। जब गायें हट गयी तो गव्य मिलने बंद हो गये और जब गव्य मिलने बंद हुए तो देवता भी अदृश्य हो गये, वेदों की रचनाएँ भी अदृश्य हो गयी, मंत्र-तंत्र अभी व्यासजी महाराज बता रहे थे कि गंधर्वो का संगीत और अन्य-अन्य लोगों की जो विद्याएँ थी वो सब गो में प्रतिष्ठित थी। गो की अनुपस्थिति से, गो के गव्यों की अप्राप्ति से सब लुप्त हो गई और उन सब के लुप्त होने से, केवल ये ही लुप्त नहीं हुए हैं, पृथ्वी में डाले हुए बीज भी लुप्त हो गये कारण क्या है? कारण यह है कि गो के माध्यम से ही पृथ्वी सहित इन सभी लोकों का

पोषण होता है। पृथ्वी को पोषण ही नहीं मिलेगा तो जैसे गोमाता को चारा ही नहीं मिलेगा, जल ही नहीं मिलेगा तो दूध कहाँ से देगी, गोमूत्र कहाँ से देगी? तो पृथ्वी को पृथ्वी का आहार नहीं मिला इसलिए पृथ्वी का जो दूध है अन्न, गव्य आदि वो बंद हो गये। कथा में यह कहा कि पृथ्वी बीज खा लेती है, पर वास्तव में हुआ यह है कि पृथ्वी को पोषण मिला ही नहीं, पृथ्वी निष्प्राण थी और उसमें वो बीज डाले तो निकले कैसे? बाद की सारी कथा महाराजश्री ने बतायी है।

आज भी हम उसी तरफ जा रहे हैं। धीरे-धीरे पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश दूषित होते जा रहे हैं, भयंकर दूषित हो रहे हैं। देखने में तो दिख रहा है कि हमें अन्न भी मिल रहा है, हवा भी चल रही है, सूर्य भी उदय हो रहे हैं, पर इन सब उत्पादनों में इनके द्वारा प्रदत्त जो जीवनी शक्तियाँ हैं उनमें विष घुल रहा है। ये जो पंचभूत हैं- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये तो प्रत्यक्ष विषैले हो गये हैं। पिछले कई दिनों से पूज्य व्यासजी ने इस बात पर भी जोर दिया है कि भाई सूक्ष्म प्रकृति विषैली हो गई है। स्थूल समष्टि प्रकृति है, उसके विष का शमन करने के लिए अगर सूक्ष्म प्रकृति शुद्ध होती तो उसका शमन हो जाता, सूक्ष्म प्रकृति भी विषैली हो गयी।

अष्टधा प्रकृति में मन, बुद्धि और अहंकार हैं और इन तीनों को देखें तो बुद्धि का अर्थ है विचार, मन का अर्थ है भाव-चिन्तन और अंहकार का अर्थ है व्यक्तित्व। हमारा जो व्यक्तित्व है यह भी तीनों विकृत हो गये, इनमें भी विष घुल गये हैं। इस अष्टधा प्रकृति की शुद्धि के लिए, इनमें व्याप्त विषके शमन के लिए और इन्हें नवशक्ति प्रदान करने के लिए गोमाता के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। कोई उपाय है ही नहीं। इसलिए जब कभी भी जल्दी से जल्दी हमारा यह समाज, देश और दुनिया इस बात को समझ लेंगे तभी मानव जाति का वास्तविक भला होगा। इसमें जितनी देरी करेंगे उतनी ही अधिक हानि होगी। ईश्वर कृपा करे कि जल्दी से जल्दी उनके यह बात समझ में आवे और वे पुन: गोपालन लोक संस्कृति की ओर मुड़े।

आज हम देख रहे हैं पूज्या गोमाताओं के रहने के, विचरने के, जल के, स्वास्थ्य के जो संसाधन प्रकृति ने दिये हैं, वैदिक काल से चले आ रहे हैं वे सारे संसाधन नष्ट कर दिये या किये जा रहे हैं। बड़े-बड़े पहाड़ों को तोड़ा जा रहा हैं, सारी गोचर भूमियाँ नष्ट की जा रही हैं, नदियाँ सब अवरुद्ध की जा रही हैं, यज्ञ समाप्त हो गये हैं। और यदि कोई यज्ञ करते भी हैं तो वो वास्तव में यज्ञ नहीं हैं। यज्ञ तो गाय में प्रतिष्ठित है, गव्य नहीं तो यज्ञ कैसे? बिना गव्यों के यज्ञ कहाँ से होगा? आप कहोगे कि घी तो गाय का ही ले जाता हूँ। अरे! केवल घी ही गव्य नहीं है। केवल दूध, दही, गोमूत्र और गोबर ये पंचगव्य तो प्रत्यक्ष गाय देती है इसलिये हम इसे पंचगव्य कहते है। इसके अतिरिक्त पृथ्वी से जो भी मिलता है हव्य, कव्य, समिधाएँ, फल, औषधि आदि ये सब गव्य हैं और ये गव्य हों तभी ही यज्ञ सिद्ध होगा। अगर यह गो बिना, गाय के गव्यों के बिना यह फल मिलेगा तो वो तो फर्टीलाईजर से होगा, रसायन से बना हुआ होगा, तामसी होगा उनको देवता ग्रहण करेंगे नहीं, देवताओं को मिलेगा ही नहीं।

जैसा कि आपने देखा होगा यह रेडियो है, टी.वी. है, इनके जो-जो नम्बर हम लगाते हैं उसी नम्बर पर वो दृश्य आते हैं। ऐसे ही यह गव्य है। हमने देवता के नम्बर तो लगा दिया पर संदेश असुरों को भेज दिया तो देवता के पास नहीं जायेगा, असुरों के पास जायेगा, देवताओं का नम्बर लगेगा ही नहीं। गव्यों से देवताओं का नम्बर लगेगा और तामसी वस्तुओं से तो तामसी नम्बर अर्थात् असुरों के पास चला जायेगा।........शेष अगले अंक में

गाय की महत्ता और आवश्यकता

(संकलित)

श्री वेदलक्षणा गाय जिसको साधारण भाषा में भारतीय देशी गाय भी कहते हैं, इस धरती पर परमात्मा की अनुपम कृति व सनातन संस्कृति की अनमोल धरोहर है। इस लेख में आगे हम इसे गाय से सम्बोधित करेंगे तथा इस पत्रिका में जहाँ भी गाय शब्द आया है वो वेदलक्षणा गोमाता के लिये आया है। गाय मनुष्य को सभी प्रकार से पोषण देने व उन्नत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जहाँ एक ओर गाय का दूध, दही, घी, गौमूत्र व गोबर व्यक्ति को स्वस्थ, बुद्धिमान व बलवान बनाते हैं तथा गाय का दर्शन, स्पर्श, परिक्रमा मनुष्य के पाप-ताप का नाश करते है, वहीं दूसरी ओर गाय व गो-उत्पाद समाज के लिए वरदान स्वरूप हैं एवं किसान व बेरोजगारों के लिए रोजगार के द्वार खोल देते हैं। कहावत है-

जननी जनकर दूध पिलाती, केवल साल-छः माह भर।
गोमाता पय-सुधा पिलाती, रक्षा करती जीवन भर।।

गोमाता माँ के समान जीवनभर हमारा पालन -पोषण करती है। जीवन की लगभग सम्पूर्ण दैनिक आवश्यकताएं गाय से पूर्ण हो जाती है। इसलिए हमारी संस्कृति में गाय को माता का दर्जा दिया गया है। विष्णुधर्मोनत्तर पुराण में आता है- **गावो विश्वस्य मातरः।** 'गाय सम्पूर्ण विश्व की माता है।'

महाभारत के अनुशासन पर्व में भी कहा है-

मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः ।

'गौएँ सर्व प्राणियों की माता कहलाती है। वे सबको सुख देनेवाली है।' इस पर विचार करें- गाय समस्त भूत प्रणियों की माता है और सबको सुख देने वाली है। भगवान के अलावा कौन है जिसके लिये यह कहा गया है? ईश्वर और गाय दो ही ऐसे हैं जो सबको सुख देने वाले हैं। गोमाता की आरती में कहा गया है-

सेवक हो चाहे दुःखदाई।
सम पय सुधा पियावति माई।
शत्रु मित्र सबको सुखदाई।
स्नेह स्वभाव विश्व जैया की।

गोमाता भेदभाव नहीं करती है, वो दुःख देने वाले को भी अमृत सा दूध देती है। अच्छे से अच्छा मनुष्य भी कुछ भेदभाव तो कर सकता है, पर गोमाता सबको समान दृष्टि से देखती है। मित्र को तो सभी सुखदाई होते ही हैं, पर हमारी गोमाता तो शत्रु को भी सुख देने वाली है। विश्व की जननी गोमाता का स्वभाव ही स्नेह करने का है। कितनी अद्भुत है हमारी गोमाता!

गाय प्रेम, दया, त्याग, संतोष, सहिष्णुता एवं वात्सल्य की साक्षात् मूर्ति है। परम श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज ने कहा है- "गाय की छाया भी बड़ी शुभ होती है। उसके दर्शन से यात्रा सफल हो जाती है। दूध पिलाती गाय का दर्शन बहुत शुभ माना जाता है। गाँव-प्रदेश की यात्रा तो क्या, गाय की सेवा से जीवन यात्रा भी सफल हो जाती है।

सुरभी सनमुख सिसुहि पिआवा।
मंगल गन जनु दीन्हि देखाई ।।

'गाय सामने खड़ी बछड़ों को दूध पिलाती हैं। मानो सभी मंगलों का समूह दिखाई दिया ।'

गाय महापवित्र होती है। उसके शरीर का स्पर्श करनेवाली हवा भी पवित्र होती है। गाय की सेवा करने से अंतःकरण निर्मल होता है। संत कहते है कि "गो और गीता ईश्वरप्रदत्त अमूल्य निधि है। इन दोनों का आश्रय लेकर मनुष्यमात्र स्वस्थ, सुखी व सम्मानित जीवन की प्राप्ति और परमात्मप्राप्ति भी कर सकता है

गाय के शरीर और उनके रोमकूपों में देवी-देवताओं और ऋषियों का वास है। महाभारत के अनुशासन पर्व और पद्म पुराण में गाय के अंगों में देवताओं के निवास के संबंध में कहा गया है-

सप्रजापतिशक्राद्या देवा गात्रेषु संस्थिताः।
रोमकूपेषु मुनयस्त्वच्यदित्याः प्रतिष्ठिताः।।

अर्थात् ब्रह्मा (प्रजापति), इंद्र आदि समस्त प्रमुख देवता गाय के विभिन्न अंगों (गात्रेषु) में निवास करते हैं। गाय के शरीर के सभी रोमकूपों (रोम छिद्रों) में महान ऋषियों और मुनियों का वास है और उनकी त्वचा (त्वचा) में सभी आदित्यों (सूर्य देव के विभिन्न रूपों) का वास है।

एक और पूजनीय श्लोक है- **सर्वदेवमयी हि गौः।** अर्थात, गाय साक्षात सभी देवताओं का स्वरूप (सर्वदेवमयी) हैं।

स्कन्द पुराण और गांधर्व तंत्र में एक श्लोक है-

गवामंगेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश।
ब्रह्मा विष्णुः शिवश्चौव सर्वदेवाः सवासवाः।।

अर्थात् गाय के अंगों में चौदह भुवन (समस्त ब्रह्मांड) स्थित हैं। उसके शरीर में ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा इन्द्र सहित समस्त देवी-देवता वास करते हैं।

यही कारण है कि सनातन धर्म में केवल एक गाय की सेवा और पूजा करने से सभी देवी-देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त होना माना जाता है। अर्थात् गोमाता में सात्विक कणों, सात्विक तरंगों का वास है। श्रद्धा-भक्ति से गो को प्रणाम करने से इन सभी देवी-देवताओं का एक साथ प्रणाम हो जाता है। इन सबको एक साथ प्रसन्न करना हो तो सरल व उत्तम साधन है गोसेवा। आप गो को एक ग्रास खिला दीजिये, उपरोक्त सारे देवी-देवताओं को पहुँच जायेगा और उससे आपको उन सभी की प्रसन्नता प्राप्त हो जाएगी। इसके विपरीत गाय के साथ हमारे द्वारा किया गया कोई भी गलत व्यवहार इन 33 कोटि देवों के साथ गलत व्यवहार होगा और 33 कोटि देवों के कोपभाजन का शिकार आपको होना पड़ेगा। गीताजी में भगवान ने कहा है-

ये यथा मां प्रपद्यन्ते, तांस्तथैव भजाम्यहम्।

अर्थात् जो भक्त मुझे जिस भाव से भजता है, मैं उसे उस अनुसार फल देता हूँ। अर्जुन का भगवान के साथ प्रेम का सम्बन्ध था तो भगवान ने भी बदले में प्रेम दिया, कंस ने भगवान के साथ दुश्मनी का संबंध रखा तो भगवान ने भी वैसा ही व्यवहार किया कंस के साथ। इसी प्रकार गोमाता की सेवा करेंगे तो 33 कोटि देवता आपको आशीर्वाद देंगे और गाय को दुःख देंगे, पीड़ा देंगे, भूखा प्यासा रखेंगे तो 33 कोटि देव नाराज हो जायेंगे और श्राप भी दे सकते है।

इसी प्रकार 'गो रूपी तीर्थ में गंगा आदि सब पवित्र नदियों तथा पावन तीर्थो का वास है, उसकी परम पावन धूली में पुष्टि विद्यमान है, उसके गोबर में साक्षात लक्ष्मी विराजमान है और गोमूत्र में गंगाजी विराजमान हैं, उसे प्रणाम करने से व्यक्ति धर्म-सम्पन्न हो जाता है। अतः गौ सदा-सर्वदा प्रणाम करने योग्य है-

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः।।

अर्थात् कल्याणमयी, सुख-समृद्धि देने वाली और सुरभि (कामधेनु) की पुत्रियों के रूप में प्रतिष्ठित गौमाताओं को मेरा सदा सर्वदा प्रणाम है। ब्रह्मा जी की पुत्रियों के समान पूजनीय और परम पवित्र गौमाता को बारंबार नमस्कार है।

जो प्रतिदिन स्नान करके गो का स्पर्श करता है, वह मनुष्य सब प्रकार के स्थूल पापों से भी मुक्त हो जाता है। जो गौओं के खुर से उड़ी हुई धूल को सिर पर धारण करता है, वह मानो तीर्थ के जल में स्नान कर लेता है और सभी पापों से छुटकारा पा जाता है। गो का स्पर्श करने, सात्विक-सदाचारी ब्राह्मणों को नमस्कार करने और सद्गुरु, देवता का भलीभाँति पूजन करने से गृहस्थ सारे पापों से छूट जाता है।

ठाकुरजी कब आओगे

(भगवत प्रेरणा से)

पिछले अंक से आगे.......

वहाँ जाते ही सबसे पहले श्री हनुमान जी को प्रणाम किया और फिर मन्दिर के पीछे कूप पर सायंकालीन स्नान संध्या वन्दन संपन्न करके वहाँ एक खाट के ऊपर विराजमान तात्कालिक महंत गणेशपुरी जी को ओम नमो नारायण बोल कर महाराज जी ने मन्दिर से उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान कर लिया। थोडी देर में जैसे ही महंतजी को पता चला तो पीछे दौड़कर जोर-जोर से आवाज लगाते हुए कुछ महानुभावों सहित महंतजी पीछ आए और प्रणाम पूर्वक महाराजजी से अनुरोध किया कि रात हो रही है आगे कोई स्थान नहीं है आज आप अपना आसन श्री हनुमानजी मन्दिर में लगाएं उससे हम सब आनंदित होंगे। इस पर महाराजजी कुछ देर वहाँ विराजे और सत्संग प्रसंग श्रवण कराए तथा अंत में उनसे विनम्रतापूर्वक साधुवाद देते हुए कहा कि हम रात्रिकालीन विश्राम एकांत में ही करते हैं। आप अपने मन्दिर पधारिए। बड़े निराश भाव से महंत जी तथा अन्य लोग वापिस चले गए।

उसी जगह जाल (पीलू वृक्ष) के नीचे महाराज जी ने आसन लगा दिया। एक पहर रात व्यतीत होने पर महाराजजी वहाँ से जन्मभूमि की ओर विजय कर गए। चन्द्रमा के प्रकाश में खाली खेतों के अन्दर चलते-फिरते रात को तीसरे पहर के अंत में जन्मभूमि पर जननी निवास परिसर द्वार तक पहुँचकर दरवाजा खोलने का प्रयास किया। आवाज होने पर सोहनलाल जी तथा हंजारी जी जागकर द्वार पर आये और पूछा कौन है? महाराजजी बोले भूत है।चन्द्रमा के प्रकाश में वर्षो बाद साधु वेष में देखकर एकदम नहीं पहचान सके परंतु अचानक अनुमान हो गया कि यह वही हो सकते हैं। उन्होंने द्वार खोला वहाँ से महाराजजी सीधे निज जननी के विश्राम कक्ष में आ गए। माँ के चरणों की ओर साष्टांग प्रणाम किया तब निश्चित हो गया कि यही है। महाराज जी ने अपनी माताजी के चरण स्पर्श किए उससे माँ बैठी हो गई। चरणों में अपने कलेजे का टुकड़े को देखा तो अत्यंत करूणा पूर्वक आसु बहने लगे। घंटों तक माता और पुत्र वात्सल्य तथा मिलन के गहरे भाव में डूब गए। नैत्रों में गंगा यमुना का प्रवाह बह रहा था। इधर भैया हंजारी जी व चाचा सोहनलाल जी भी पास में बैठे हुए अत्यधिक व्याकुल हो रहे थे। चारों तरफ सन्नाटा, कोई कुछ बोल नहीं रहा था। वर्षो का वियोग जब क्षण भर में सिमट गया, तो शब्द बौने हो गए। माँ की ममता, और चाचा का स्नेह सब आँखों के रास्ते बह निकले। उस बंद कमरे में पसरा सन्नाटा कोई शून्यता नहीं था, बल्कि भावनाओं का वह ज्वार था जिसे शब्दों की बैसाखियों की जरूरत नहीं थी। सब पास थे, सब साथ थे, पर कंठ अवरुद्ध थे मानो मौन ही उस मिलन का सबसे बड़ा उत्सव मना रहा हो।

वर्षो की दूरी पिघल गई, जब अपनों की बाहें खुलीं।
कंठ रुँधे, अधर सिले, बस नयनों से बातें हुईं।।
माँ की ममता, चाचा का आशीष, आँसुओं में बह आया।
उस निशब्द मिलन के आगे, शब्दों का वजूद डगमगाया।

जब भावनाएँ अपनी चरम सीमा पर होती हैं, तब भाषा मौन धारण कर लेती है। वर्षो बाद हुए इस मिलन में शब्दों की हार हुई और आँसुओं ने संवाद का कार्यभार सँभाल लिया।

इस बीच अचानक द्वार की तरफ से रामहरि आवाज आई। ज्ञात हुआ कि आम्लगढ से श्री नाना जी (मगरामजी राजगुरु) महाराज पधारे हैं। यह सुनकर मन ही मन महाराज जी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतनी वृद्ध अवस्था में 12 किलोमीटर दूर से रात के समय अकेले पैदल चलकर आप क्यों और कैसे पहुँच गए है?

श्रीमगारामा जी का छाया चित्र सहित संक्षिप्त परिचय- श्री मगारामजी राजगुरु पूर्वाश्रम के सांसारिक संबध में महाराजजी के पूज्य नानाजी लगते थे। आपने ही 9 वर्ष की आयु में गंगा तट पर महाराजजी का यज्ञोपवित संस्कार कराया था। श्री मगारामजी राजगुरु आमली (आम्बलगढ) के जागीरदार परम भागवत श्री जेठाजी राजगुरू के बड़े सुपुत्र थे। आपको 42 वर्ष की आयु में तीव्र वैराग्य हो जाने कारण सभी प्रकार के लोक व्यवहार छोड़ दिये और केवल फलाहार पर निर्वाह करते हुए अपरिग्रह पूर्वक हरि भजन में लीन रहते। गीता भवन ऋषिकेश बद्रीनाथधाम, काशीपुरी, सिद्धपुर, द्वारकापुरी आदि तीर्थो में निवास करते थे। आपने परम विरक्त स्वामी श्री कृष्णानंदजी महाराज से आध्यात्मिक दीक्षा ली। 50 के दशक में धर्म सम्राट करपात्री जी महाराज के गोरक्षा आन्दोलन में भी लम्बे समय तक भाग लिया। आपका अधिक समय विरक्त स्वामी कृष्णानंदजी महाराज आध्यात्मिक क्रान्ति के जनक प्रज्ञाचक्षु स्वामी श्री शरणानंदजी महाराज, गीताप्रेस के संस्थापक श्री जयदयालजी गोयन्दका, स्वामी अखंडानंदजी महाराज एवं ब्रह्मऋषि देवशंकरजी महाराज आदि महापुरुषों के सत्संग में ही व्यतीत होता था।

अपनी पूज्या माताजी को प्रणाम करके महाराज जी पूज्य नानाजी के सामने गए चरण वन्दन हेतु आगे बढ़े तो श्री मगारामजी ने उनके हाथ पकड़ लिए। बोले आप वन्दनीय हैं। परस्पर पूज्य तथा वन्दनीय भाव के अपने-अपने आग्रह से श्री नाना जी और दोहीता का मिलन अद्‌भुत और दर्शनीय बन गया था। महाराज जी की पूज्या माताजी पूज्य पिताजी तथा परिवार के अन्य सदस्य भी उस जगह उपस्थित हो गए थे। अरूण आभा से थोड़ा थोड़ा उजाला हो रहा था। एक मुहूर्त पर्यन्त सब ठहर गया। अपनी पुत्री को आशीर्वाद देकर श्री मगारामजी ने महाराजजी को इंगित करते हुए कहा कि अब सूर्य उदय होने वाले है। स्नान संध्या वन्दन आदि नित्य नियम पश्चात अन्य चर्चाओ करना समुचित होगा। अच्छा जी ठीक है कहकर नित्य नियम प्रारंभ किया।

आज वर्षो बाद महाराजजी को अपनी जननी के हाथ से उषापान हेतु जल और दातुन प्राप्त हुआ साथ ही स्नान उपरांत धारण करने के लिए एक नवीन वस्त्र मिला। बड़े भ्राता ने जल की बाल्टी भरकर स्नानार्थ रख दी। उषापान उपरांत नित्य क्रिया हस्त प्रक्षालन दातून तथा स्नान करके गोमाता के गोष्ठ में बहिन द्वारा लगाए ऊनी आसन पर महाराजजी ने संध्या वन्दन प्रारंभ किया। घंटो तक ध्यान अवस्था में बैठे रहे। इधर सुर्योदय होते ही महाराज के आगमन का समाचार सुनकर आसपास से वृद्ध, प्रौढ़, युवा, बालकों सहित माताओं, बहिनों का समूह एकत्रित हो गया। आगन्तुक सभी गोष्ठ में ध्यानस्थ बैठे महाराजजी को देखकर कहने लगे कि इनका शरीर एकदम सूख गया है फिर भी मुख पर बङा तेज है। अधिक लोगों को आया जानकर श्री मगारामजी वहाँ आए। उन्होंने मन्द स्वर में रामहरि की आवाज लगाई तब धीरे-धीरे महाराज जी ने नेत्र ऊपर उठाते हुए हाथ में जल लेकर संध्या जप आदि नित्य कर्म प्रणाम पूर्वक सूर्य नारायण को समर्पित किया। तत्पश्चात गोमाता का वन्दन करके गोरज धारण की और पूज्य नानाजी तथा पूज्या माताजी को प्रणाम करके अन्य आगन्तुक लोगों का भी अभिवादन किया। पुनः गोष्ठ में आसन पर बैठ गए। बहिन रेणुका जी गोदुग्ध लेकर आई। जननी और नानाजी के आग्रह से महाराजजी ने भगवान को भोग लगाकर एक गिलास गोदुग्ध प्रसाद ग्रहण कर लिया।

धूप बढ़ने लगी इसलिए पूज्य पिताजी के अनुरोध पर महाराज जी एवं श्री मगारामजी का आसन गोष्ठ मे खड़े जाल (पीलू) वृक्ष के नीचे लगाया गया। दरी टाट लगा दिये जिससे अन्य सभी लोग सामने बैठ गए। महाराजजी हरिनाम संकीर्तन

तथा प्रार्थना करने लगे। आधा घंटा पश्चात शान्त होने के बाद श्री मगारामजी महाराज जी को पूछने लगे कि इतने वर्ष आप कहाँ थे? कौन-कौनसे तीर्थो में निवास किया? यह शरीर इतना कृष क्यों हो गया है? कौनसी उपासना करते हो? आराध्य इष्टदेव किसको मानते हो? महाराज जी ने एक एक करके सभी प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दिये उससे श्री नानाजी संतुष्ट हो गए।

मध्याह्न का समय होने पर महाराज जी के पिताजी ने आगन्तुक सज्जनों को भोजन प्रसाद का आग्रह किया तब सभी लोग भोजन के लिए चले गए महाराज और श्री मगारामजी उसी जगह विराजमान थे। दोनों के लिए भोजन प्रसाद लेकर बड़े भ्राता और चाचाजी उपस्थित हुए। परन्तु महाराज जी ने भोजन प्रसाद नहीं लिया। इतने में पूज्या माताजी आई। उनके अति आग्रह पर थोड़ा गोदधि ग्रहण करके आचमन कर लिया। मध्याह्न अल्प विश्राम पश्चात महाराजजी ने अपरान्ह में पुनः स्नान आदि नित्य नियम पूर्वक सायंकालीन संध्या वन्दन प्रारंभ कर दिया। गोष्ठ में आसन पर ध्यानस्थ विराजमान हुए बहुत देर हो गई। गहरा अंधेरा होने पर श्री मगारामजी गोघृत का दीपक लेकर निकट आए और राम हरि राम हरि राम हरि तीन बार आवाज लगाई तब धीरे धीरे शारीरिक चेष्टा से ध्यान खुला। जप ध्यान परमात्मा को अर्पित करकेगोमाताओं को वन्दन किया। श्री नानाजी पूज्या माताजी एवं पिताजी के चरणों में प्रणाम कर पुनः विराजमान हुए तब सुश्री रेणुका बहिन गोदुग्ध के साथ उपस्थित हुई। एक-एक गिलास दुग्ध दोनों महात्माओं ने ग्रहण कर लिया। इधर रात्रि जागरण की तैयारियों होने लगी। जन्मभूम सहित आसपास के गांवों से भजन संगीत विशेषज्ञ वीणा झांझ मंझीरा ढोलक आदि वाद्य यंत्रो के साथ पहुंच गए। वैदिका पर कलश स्थापना व गोघृत ज्योत प्रज्जवलित करके प्रथम भगवान गणपति का स्मरण करते हुए संत वाणी, भजन, हरिनाम संकीर्तन आरंभ हो गया। थोड़ी दूरी पर महाराज जी और श्री मगारामजी राजगुरु का व्यक्तिगत सत्संग होने लगा। रात्रिकालीन तीन पहर पर्यन्त आध्यात्मिक साधन, ईश्वर उपासना और मानव जन्म के उद्देश्य संबंधित अनेक प्रकार से प्रश्नोतर हुआ और दोनों के मध्य यह सहमति बनी कि अकाल समाप्ति तक महाराज जी इधर ही रहेंगे।

प्रातःकाल श्री मगारामजी राजगुरू द्वारा उपरोक्त जानकारी परिवार सहित उपस्थित सभी लोगों को प्रदान की गई इससे सबको अत्यंत प्रसन्नता हुई। विशेष रूप से महाराज जी की पूज्या माताजी अति आनंदित हुई। पारिवारिक आवास से कुछ दूरी पर एक पीलू वृक्ष के नीचे महाराज जी का आसन और धूणा लगाया गया। आपने अपने नित्य नियम के साथ अकाल पिड़ित गोवंश की सेवा प्रारंभ कर दी। दिन-रात कोसों दूर तक घूम-घूम कर भूख प्यास से व्यथित बैठे हुए गोवंश को पानी पिलाना और खेजड़ी की पत्तियाँ तोड़कर खिलाना यह सब सेवाएं दिनचर्या का भाग बन गई। मध्याह्न व संध्या समय में श्री मगारामजी राजगुरू के साथ पिताजी ग्रामवासी वृद्धजन महाराजजी की पूज्या माताजी, परम भक्ता जेवो माताजी और कुछ अन्य श्रद्धालुओं का आगमन होता तब रामचरितमानस, गीता, संतवाणी आदि का दो-दो घंटे का सत्संग हो जाता था।

उधर सांचोर नगर में यह समाचार हो जाने से कुलपुरोहित पंडित श्री रामनारायणजी जोशी व पंडित विजयरामजी व्यास संस्कृत विद्वान पंडित पुखराजजी दिवेदी, ब्रह्मनिष्ठ गोपूरामजी महाराज, स्वामी बलदेवपुरीजी महाराज, श्री कोजारामजी नाबरीया, श्री बीजलारामजी वकील, श्री लक्षमण जी सुथार सिद्धेशवर, साध्वी नाजू माताजी व धापू माताजी पालड़ी आदि संत महात्माओं, साधकों तथा सत्संगियों का आना-जाना भी प्रारंभ हो गया। इससे सत्संग में अधिक समय लग जाता था।.......लगातार

मानव देह की दुर्लभता

(संकलित)

.....पिछले अंक से आगे

......जो मनुष्य ऐसी अनुकूलता पाकर भी इस संसार-सागर से पार नहीं होता, वह निश्चित ही अपने आप को नष्ट करने वाला यानी आत्म-हत्यारा है।

ग) साधन धाम मोच्छ कर द्वारा

गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस के उत्तरकाण्ड में संत समागम और कपि-संवाद के माध्यम से इस सत्य को बेहद सरल और मर्मस्पर्शी भाषा में समझाया है। जब भगवान श्री राम अयोध्या वासियों को उपदेश देते हैं, तो वे कहते हैं-

आकर चारि लच्छ चौरासी। जोनि भ्रमत यह जिय अविनासी।
कबहूँक करि करुना नर देही। देत ईस बिनु हेतु सनेही।
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा। पाइ न जेहिं परलोक सँवारा।
सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ।
कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाइ।।

तुलसीदास जी कहते हैं कि चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद भगवान बिना किसी स्वार्थ के कृपा करके यह मानव शरीर देते हैं। यह शरीर साधनों का घर और मोक्ष का दरवाजा है। इसे पाकर भी जिसने अपना परलोक (आत्म-कल्याण) नहीं सुधारा, वह मूर्ख अंत समय में सिर धुन-धुन कर पछताता है और अपनी गलती छुपाने के लिए व्यर्थ ही काल, कर्म और ईश्वर पर दोष मढ़ता है।

आत्म-कल्याण न करना आत्महत्या क्यों है?

सामान्य संसार में आत्महत्या का अर्थ शरीर को नष्ट करना माना जाता है। परंतु अध्यात्म में, शरीर से परे जो नित्य, शुद्ध और बुद्ध आत्मा है, उसकी उन्नति को रोक देना ही उसकी हत्या है।

चेतना का पतन: जब हम केवल खाने, सोने, भयभीत होने और वंश बढ़ाने (आहार, निद्रा, भय, मैथुन) में ही जीवन बिता देते हैं, तो हम पशु के धरातल पर जी रहे होते हैं। पशुओं के पास विवेक नहीं होता, इसलिए उन्हें पाप-पुण्य नहीं लगता। परन्तु मनुष्य के पास विवेक होते हुए भी यदि वह केवल भोग-वासनाओं में लिप्त रहता है, तो वह जानबूझकर अपनी दिव्य चेतना का गला घोंट रहा होता है।

पुनरावृत्ति का चक्र: इस दुर्लभ देह को खोने के बाद जीव पुन: चौरासी लाख योनियों के कष्टप्रद चक्र (कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी) में गिर जाता है। अत: वर्तमान सुअवसर का लाभ न उठाना अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मारने जैसा है।

आत्म-कल्याण का वास्तविक मार्ग क्या है?

शास्त्रों ने मानव जीवन को सफल बनाने के लिए अत्यन्त व्यावहारिक मार्ग सुझाए हैं-

1. **विवेक और वैराग्य:** संसार की नश्वरता को समझना और सत्य (परमात्मा) की खोज करना।
2. **सदाचार और निष्काम कर्म:** गोमाता, समाज और प्राणिमात्र की सेवा बिना किसी अहंकार या फल की इच्छा के करना। 3. **स्वाध्याय और साधना:** नित्य शास्त्रों का अध्ययन, नाम-जप, ध्यान और सत्संग के माध्यम से मन को अंतर्मुखी करना। 4. **शरणागति:** अपनी सामर्थ्य के अनुसार पुरुषार्थ करके अंतत: फल और जीवन को ईश्वर के चरणों में समर्पित कर देना। ईश्वर आश्रित हो जाना।

निष्कर्ष : यह मानव जीवन एक अमूल्य हीरा है, जिसे कौड़ियों के भाव (क्षणभंगुर सांसारिक सुखों के बदले) नहीं बेचना चाहिए। आदि गुरु शंकराचार्य जी ने अपने ग्रंथ 'विवेकचूड़ामणि' के प्रारंभ में ही कहा है कि तीन चीजें केवल ईश्वर की कृपा से ही मिलती हैं: मनुष्य शरीर, मोक्ष की तीव्र इच्छा और महापुरुषों की शरण। यदि हमें मनुष्य शरीर मिला है, तो आधी यात्रा तय हो चुकी है। अब अपनी सुप्त चेतना को जगाकर आत्म-कल्याण के मार्ग पर बढ़ना ही हमारा परम कर्तव्य है। जो इस कर्तव्य से विमुख रहता है, वह वास्तव में कृतघ्न है और स्वयं की आत्मा का हनन करने के कारण महापाप का भागी बनता है। जागने का समय यही है, पता नहीं कब श्वास रुक जाए।

श्रीमद् भागवत कथा

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

......पिछले अंक से आगे

8 महीने तक सूर्य ने जो रस को सोखा था, जो जल को सोखा था अब वो 4 महीने में बरसा रहे हैं। कैसे? जैसे प्रजावत्सल राजा जनता से टैक्स लेता है, राजकर लेता है और उस कर में उसे जो राजस्व मिला है उसको जनता की उन्नति के कार्यो में लगाता है। आज जो भारतवर्ष में विकास के बड़े-बड़े कार्य हो रहे हैं, विकास दर भारतवर्ष की घट नहीं रही है। वैश्विक स्तर पर ऐसे घटनाक्रम होने के बावजूद भी भारत की विकास दर लगातार बढ़ती जा रही है और लोग विचार कर रहे हैं कि 2047 तक भारतवर्ष विकसित राष्ट्र होगा, बल्कि 1 नम्बर पर होगा। अमेरिका, चीन सब दो नम्बर, तीन नम्बर पर जायेंगे भारत एक नम्बर पर होगा। आवश्यकता इस बात की है कि जैसे कर्मठ और समर्पित राष्ट्रभक्त शासक इस समय देश को मिले हुए हैं इसी तरह के कर्मठ और समर्पित शासक देश को मिलते रहे तो हम समझते हैं कि 2047 के पहले देश पूरे विश्व में प्रथम स्थान प्राप्त करेगा।

तो जैसे राजा कर लेता है और प्रजा से कर लेकर के प्रजा के विकास में, प्रजा की उन्नति में ही प्रजा की रक्षा सुरक्षा और पोषण में ही उस राजस्व का व्यय करता है, ऐसे ही सूर्य भगवान ने अपनी किरणों के माध्यम से जो टैक्स लिया था, जो जल सोखा था, 4 महीने उसकी वर्षा करके पूरी धरती को सूर्य नारायण हरा भरा कर रहे हैं।

तडिद्वन्तो महामेघाश्चण्डश्वसनवेपितारू ।
प्रीणनं जीवनं ह्यस्य मुमुचुरू करुणा इव ।।

तेज हवा से कांपते हुए, बिजली से युक्त विशाल बादलों ने, मानो करुणा की तरह, इस पृथ्वी को तृप्त करने वाला और जीवन देने वाला जल बरसाया। जैसे कोई दयालु महापुरुष दुःखी को देखकर करुणा से भर जाता है, वैसे ही काले-काले बड़े बादल तेज आंधी में डोलते हुए, बिजली चमकाते हुए धरती पर अमृत जैसी बारिश कर रहे थे। वो बारिश धरती की प्यास बुझाने वाली और सबको नया जीवन देने वाली थी। बड़ा अद्भुत भाव है। कहते हैं जैसे दयाल पुरुष जब देखते हैं कि प्रजा बहुत अधिक पीड़ित हो रही है तो दया परवश होकर वे प्रजा के सुख के लिए अपने प्राणों को भी न्योछावर करने में संकोच नहीं करते, अपने प्राणों का भी न्योछावर कर देते हैं ऐसे ही बिजली चमक रही है और घनघोर बादल बरस रहे हैं मानो लगता है कि ये बादल करुणावश बरस रहे हैं और अपना हृदय लूटा रहे हैं प्रजा पर सर्वस्व लुटा रहे हैं।

कहते हैं धरती की शोभा वर्षा ऋतु में कैसी हो गई? जब कोई व्यक्ति कठोर तप करने के लिए निकलता है, अन्न-जल आदि त्याग देता है केवल वायु का आहार, कभी सूखे पत्ते खाकर कभी जल पीकर फिर सूखे पत्ते जल भी छोड़कर केवल वायु का आहार करता है तो उसका शरीर दुर्बल हो जाता है, अस्थि मात्र में राहु शरीर तड़प में नहीं पी रहा और जब उस तपस्वी की तपस्या सिद्धावस्था को प्राप्त होती है, उसके मनोरथ की पूर्ति होती है तो वह तपस्वी हरा भरा हो जाता है, निष्काम हो तो और सकाम हो तो। अगर निष्काम है तो भगवत साक्षात्कार होते ही दिव्य हो जाएगा और सकाम भाव से कर रहा है तो, हिरण्यकशिपु ने सकाम भाव से तपस्या की ब्रह्मा जी का दर्शन होते ही फिर से हृष्टपुष्ट हो गया था हड्डियों का ढ़ांचा रह गया था, सारे शरीर को दीमक खा गई थी। मनुजी ने तप किया निष्काम भाव से बाद में भगवान को पुत्र बनाने की कामना की उनको भी क्या हुआ?

मृतक जिआवनि गिरा सुहाई।

श्रवन रंध्र होइ उर जब आई।।
हृष्ट पुष्ट तन भए सुहाए।
मानहुँ अबहिं भवन ते आए।।

मुर्दे को भी जिला देने वाली यह सुंदर वाणी कानों के छेदों से होकर जब हृदय में आई, तब राजा-रानी के शरीर ऐसे सुंदर और हृष्ट-पुष्ट हो गए, मानो अभी घर से आए हैं। धरती ने भी ग्रीष्म काल में तपस्या की। खूब तपी धरती। तपस्या को तप कहते हैं। धरती खूब तपी और तपते-तपते ऐसी हो गई कि पेड़ों के भी पत्ते सूख गये, घास नहीं रह गई। उस समय सब दुःखी होते हैं लेकिन एकप्राणी भगवान की सृष्टि का बहुत सुखी होता है। नाम है उसका-वैशाख नंदन अर्थात गधा। वर्षाकाल में सब सुखी रहते हैं, लेकिन पूरी धरती जब घास से हरीभरी होती है तो गधा बहुत दुःखी रहता है। चरते-चरते जब चारों तरफ देखता है तो सोचता है कि इतनी सब हरियाली अभी बची हुई है, मैंने क्या चरा, कुछ नहीं चरा। खाया ही क्या अभी तक? इतना सारा चारा मैं कब खाऊँगा? इसी दुःख में कि क्या हमारी भूख मर गई? हम कुछ खा ही नहीं पा रहे हैं। हमारे होते हुए इतनी हरियाली कैसे रह गई। इस दुःख के कारण कमजोर हो जाते हैं भाई साहब। वैशाख में कहीं-कहीं कोई पानी के सहारे थोड़ी-थोड़ी दूब रहती है उसको भी गधे चढर जाते हैं। जब आगे मुँह उठाकर देखते हैं पूरा मैदान खाली दिखाई पड़ता है, धूल उड़ रही है फिर पीछे मुड़कर देखते हैं तो उधर भी सब खाली मैदान दिखाई पड़ता है तो बहुत खुश होते हैं कि हम सब घारस च गए अब कुछ नहीं बचा है तो वे हेंचू हेंचू करके फिर वहीं लौटने लग जाते हैं, आनंद का अनुभव करते हैं। इसलिए उनको वैशाख नंदन कहा गया। वैशाख मास में गर्मी के समय में बहुत आनंदित होते हैं। इसलिए उनको वैशाख नंदन कहा गया।

तो धरती ने जो तपस्या की थी वह तपस्या अब फलीभूत हो गई है। वर्षा हुई है उसके कारण सारी धरती हरी भरी हो गई। हम आपसे आग्रह करते हैं जो यहां बैठे हैं उनसे और जो सोशल मीडिया के माध्यम से अपने घरों में बैठकर सुन रहे हैं उनसे। हम आग्रह करते हैं कि आप जब भी ब्रज आवे, जब भी आप ब्रज में आवे तो श्री जड़खोर गोधाम का दर्शन जरूर करें। कब करें? वर्षा काल में। वैसे तो जब भी आए हमेशा ही वहाँ आपको अच्छा लगेगा लेकिन जब वर्षा का समय हो, बरसात में नहीं आ पाएं तो आप कुंवार में आ आएं, कार्तिक में आ जाएं तो उस समय आपको इतना अद्‌भुत नजारा वहाँ दिखाई पड़ेगा, चारों ओर बड़े-बड़े पर्वत हरे-भरे एकदम हरियाली से भरे हुए ऐसा अद्‌भुत दृश्य वहाँ का होता है और जब हजारों की संख्या में गाएं पर्वत से उतरती हुई आती है, चरती हुई जाती है उस समय यह भाव सहज बन जाता है कि उनके पीछे गवारियों के झुंड में कृष्ण-बलराम भी जरूर आ रहे होंगे।

हमारे वृंदावन की एक माताजी ने तो प्रत्यक्ष गोचारण लीला में कृष्ण-बलराम के प्रत्यक्ष दर्शन किये। एक कई साल पुरानी बात है उन माताजी ने प्रत्यक्ष गोचारण लीला में कृष्ण-बलराम के जड़खोर गोधाम में प्रत्यक्ष इन्हीं आंखों से गैया चराते हुए दर्शन किये। आपने देखा होगा वह माताजी मंदिरों की पोशाक बनाती थी। अपने मलूक पीठ की भी कई बार पोशाक बनाई। वह मंदिरों की पोशाक बनाती थी। मारवाड़ी परिवार की थी माताजी। पैसे तो मंदिरों से लेती नहीं थी। कपड़ा भी अपने खरीदना, गोटा वगैरा भी सब अपने खरीदना और बना करके हाथ से सिलकर पोशाक देना और कोई ऐसे सेठ होते कि मैया हमारे ठाकुर जी की पोशाक बनानी है तो कहते भैया पैसा लूंगी, इतने का मखमल आया, इतने को गोटा आया तो पैसा लगेगा। उस पैसे को माता जी अपने व्यवहार में नहीं लेती थी। उसे ठाकुर सेवा, गौ सेवा, संत सेवा में लगाती। कुछ बचत करके धीरे-धीरे उन्होंने रुपया इकट्ठा किया ....

श्री राम कथा

(पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज)
श्री राम पंचायती मंदिर संगरिया

पिछले अंक से आगे........

.......राम कथा की अद्भुत पूंजी हम जीवों को प्राप्त है। इसमें सबके लिए समान अधिकार दिया है। कोई जीव ऐसा नहीं कि मानस का अधिकारी ना हो, भगवान की कथा के अधिकारी ना हो, वो श्रोता बनकर रामचरित्र को ना सुन सके। बाबा ने फलश्रुति बताई-

जे एहि कथहि सनेह समेता।
कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता।
होइहहिं राम चरन अनुरागी।
कलि मल रहित सुमंगल भागी।।

जो भी मनुष्य इस कल्याणकारी कथा को स्नेह (प्रेम) पूर्वक कहेगा, सुनेगा और सावधानी (सचेत होकर) से इसके मर्म को समझेगा वह जीव भगवान श्री राम के चरणों का प्रेमी बन जाएगा। उसके कलियुग के सभी पाप नष्ट हो जाएंगे और वह परम मंगल (सुखों) का अधिकारी बनेगा।

कथा कहने और सुनने दोनों में स्नेह की आवश्यकता होती है। भगवान के चरित्रों को जो स्नेहपूर्वक कहे, सावधान और सचेत होकर सुने उनको सीतारामजी के चरणों में अनुराग हो ही जायेगा। **कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता**- कथा सचेत होकर सुनने का मतलब क्या होता है? सुधी कहीं चली गई, बुद्धि कहीं चली गई, मन कहीं चला गया पर हम ही बैठे रहे इसको सचेत नहीं कहते, क्योंकि स्थितियां हमारी बदली हुई है। मन कहीं घूमता है, बुद्धि कहीं घूमती है, चित्त वृतियों में अनेक अलग-अलग विचार आ रहे हैं तो फिर सचेत कहाँ हुए? कहने में सचेत हो, सुनने में सचेत हो और समझने में तो सचेत होना ही पड़ेगा, सचेत नहीं होगा तो समझ में आयेगा ही नहीं। तो इस प्रकार भगवान के चरित्र को सुनने से अब क्या लाभ होगा? इसका फल होगा- **होइहहिं राम चरन अनुरागी।** यही जीव रामचरण अनुरागी हो जायेगा और इसका लाभ क्रमिक लाभ यह होगा कि- **कलि मल रहित सुमंगल भागी।** वह जीव भाग वह जीव राम जी के चरणारविंद का अनुरागी हो जाएगा साथ ही कलिमल से मुक्त हो जाएगा। कलि का कोई भी मैल/विकार *(कलिमल वह आध्यात्मिक और मानसिक मैल है जो जीव को उसके शुद्ध स्वरूप से दूर रखता है। यह मैल क्या है? 1. षडविकार (छह आंतरिक शत्रु): काम (वासना), क्रोध (गुस्सा), लोभ (लालच), मोह (आसक्ति), मद (अहंकार), और मत्सर (ईर्ष्या)। 2. अज्ञान और अंधकार: सही और गलत का भेद न कर पाना। 3. तामसिक प्रवृत्तियां: झूठ बोलना, कपट करना, हिंसा, और दूसरों को नुकसान पहुंचाना। 4. कर्मों का मैल: संचित पाप कर्म जो आत्मा को जनम-मरण के चक्र में बांधकर रखते हैं।)* उनको छू नहीं सकता जिनको भगवान का अनुराग मिल जाए। क्या उन्हें कोई कलि का विकार छू सकता है? कलि का विकार (मैल) छूता है तो अनुराग आया नहीं और अनुराग आया है तो विकार छूएगा नहीं, यह सैद्धांतिक पक्ष है। शुभ मंगल भागी- यह मंगल भवन है मानस मंगल का भवन है इनका आश्रय ग्रहण करने के बाद जीवन में शिवाय मंगल के और क्या आएगा? शुभ मंगल भाग्य बन जाएंगे जब भगवान के चरणों में ऐसी प्रीति जीव की बन जाए।

वंदना के क्रम के बीच में यह मानस के फलश्रुति पर चिंतन किया। वरना भगवत कृपा से वंदना का ही क्रम रहा। भगवान पूरे नगर की वंदना करते हैं, प्राजा की वंदना करते हैं, राजकुल की वंदना करते हैं, भगवान पिता दशरथ की वंदना करते हैं, माँ कौशल्या की वंदना करते हैं और माँ कौशल्या की वंदना करते-करते बाबा तुलसी ने क्या कह दिया-

बंदउँ कौसल्या दिसि प्राची।
कीरति जासु सकल जग माची।
प्रगटेउ जासु रघुपति रसबूपा।
बिटु कुमुद चन सुखद अनूपा।।

इसका गहरा भावार्थ और रूपक अलंकार: कौशल्या रूपी पूर्व दिशा: बाबा तुलसी कहते हैं कि मैं माता कौशल्या को 'पूर्व दिशा' मानकर प्रणाम करता हूँ, जिनकी उज्ज्वल कीर्ति पूरे संसार में फैली हुई है। प्रभु राम रूपी चंद्रमा: जैसे पूर्व दिशा से अंधकार मिटाने के लिए चंद्रमा का उदय होता है, वैसे ही माता कौशल्या रूपी पूर्व दिशा से भगवान श्री रामचंद्र जी रूपी अनुपम सुंदर चंद्रमा प्रकट हुए हैं।भक्त रूपी कुमुदिनी: इस राम रूपी चंद्रमा के प्रकट होने से संसार के समस्त भक्त, सज्जन और संत रूपी कुमुदिनी (कमल का एक प्रकार जो चंद्रमा को देखकर खिलता है) खिल उठे हैं और उन्हें परम सुख प्राप्त हुआ है।मां कौशल्या कौशल्या नहीं है वह प्राची है प्राची नाम है पूर्व दिशा का देखो दिशाएं 10 है पर दसों दिशाओं की महिमा नहीं है। महिमा तो प्राची की है, पूर्व दिशा की महिमा है। वजह सूरज को जन्म देने वाली दिशा। सूरज वहीं से प्रकट होते हैं लेकिन स्वार्थी नहीं है पूर्व दिशा। ऐसा क्यों कहा? जो उपजाया सो रखा नहीं वह बांट दिया। सूरज को जन्म देकर के पूर्व दिशा ने दसों दिशाओं को प्रकाश के देने लिए सौंप दिया। ऐसे ही पुत्र को जन्म दे और मुझे कमाकर खिलाए तक सीमा ना रखो। पुत्र को जन्म देकर अपने आंचल में ढ़ककर रखे कि तू मेरा ही है और मेरे लिए ही है तब तो माँ की महिमा घट जाएगी। तब प्राची दिशा हम नहीं बन पाएंगे। धन्य है मां कौशल्या जो प्राचीबद्ध है, सूरज को जन्म तो दिया पर दसों दिशाओं को प्रकाश बांटने के लिए अपने लाल से कहा। रघुनाथ जी जगत त्रिलोक को प्रकाश बांटते हैं। इसलिये आप भी किसी को जन्म दें तो वह लाल आपका जगत को प्रकाश दें न कि आपके लिए रोटी पानी कमाने में लग जाए। बोलो भक्त वत्सल भगवान की जय।

उपकारी बनो। अभी यहाँ हमारे जो सेवक हैं उनके पीठ पर लिखा हुआ है– 'सर्वभूतहितेरता'। हमको बहुत अच्छा लगता है गीता जी का यह मंत्र। बहुत दिव्य, बहुत दिव्य है यह संकेत। यह ईश्वर प्राप्ति का मूल साधन है। गीता जी के 18 अध्यायों में 700 श्लोकों में 'सर्वभूतहितेरता' को स्वीकार कर लिया गया तो गीता आपको समझ में आ जाएगी। गीता पढ़ लेने के बाद भी यह वृति आना बहुत कठिन है, उसके बाद उलझे उलझे रह जाते हो। हीरा को गांठ में बांधने से कोई मतलब सिद्ध नहीं होता वह तो कभी मोल लगा करके काम में बढ़ते जाएं। पारस को गांठ में बांधकर सिरहाने रखने से कोई फायदा नहीं होता, पारस से सोना रोज बनाया जाए तो मतलब सिद्ध होगा। वैसे ही गीता जी का यह श्लोक का चौथा हिस्सा मात्र गीता जी में तीन चार बार आ गया है। भगवान प्रकरण वर्णन करते हैं तो कहते हैं कि मेरा भक्त ऐसा हो, ऐसा हो, ऐसा हो, पर वह सर्वभूतहितेरता हो। हमारा जो साधक भक्त हो वो सर्वभूतहितेरता हो। प्राणी मात्रा का हितैषी हो।

यहाँ परोपकार शब्द भी गौण हो रहा है। कैसे समझेंगे? सर्वभूतहितेरता में 'पर' नहीं लगाया। 'पर' से तात्पर्य होता है जिसके बुद्धि में 'मैं' होगा उसके लिए 'पर' होगा। जहाँ 'मैं' का चिंतन होगा वहीं 'पर' हो सकता है, लेकिन जहाँ 'मैं' ही स्थित नहीं है वहाँ 'पर' कौन होगा? वहाँ तो सर्व होगा। तो संपूर्ण जगत एक भूतों का विस्तार है और संपूर्ण जगत एक भूत की सृष्टि है। भूत यानी प्रकृति और प्राणी मात्रा में जो एकत्व का चिंतन करे, यही मानव धर्म है। तुलसी बाबा ने इस बात को ठीक समझ लिया था– **सियाराम मय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।** गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि मैं इस पूरे संसार के जड़ चेतन और समस्त जीवों को सीतारामजी का स्वरूप जानकर दोनों हाथ जोड़कर श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता हूँ। ...

शिव महापुराण कथा

(वेद मंदिर अहमदाबाद)

(पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

शिव तत्व कैसा है? आज देखो, एक भाई के पास बहुत धन हो और दूसरे भाई के पास कम धन हो तो जिसके पास कम होता है वह विवाद खड़ा करता है क्योंकि जिसके पास है वह क्यों बोलेगा? जिसके पास भरपूर है वह तो नहीं बोलेगा। जिसके पास कम है वह बोलेगा कि मुझे यह नहीं दिया, मुझे ऐसा नहीं मिला सीधी बात है, लेकिन कम होने पर भी जो ना बोले तो समझो उसको विवादों से कोई लेना देना नहीं हैख वह विवाद नहीं चाहता है। कम है, अधिकार की चीज है फिर भी जो मौन है, इसका मतलब वह विवाद नहीं चाहता, इसका मतलब वह विवाद नहीं चाहता है।

अब बताओ भगवान शिव के पास क्या है? कैलाश पर्वत है। हम लोग जाते हैं दर्शन करने, क्या किसी का मन होता है कि यहाँ जमीन लेकर फार्म हाऊस बना लें, बंगला बना लें और इधर रह जाएं? किसी का मन होता है क्या? वृंदावन में लोग जाते हैं कि महाराज यहाँ कुटिया बना दें, और बनाते भी हैं लोग। अयोध्या में भी बनाते हैं लेकिन शिवजी का जो लोक है वहाँ लोग दर्शन करके कहते हैं कि घर चलो जल्दी से। जितनी जल्दी जाने की करते हैं, उतनी जल्दी आने की करते हैं। लेकिन ऐसे लोक के अधिश्वर होने के उपरांत भी भगवान शिव ने कभी किसी देव के साथ विवाद नहीं किया। कभी आपको लगा कि शिवजी भगवान विष्णु से विवाद करने लगे कि आप तो बैकुण्ठ में आनन्द करते हो और मुझे यहाँ पहाड़ पर छोड़ दिया। वे ऐसा कभी नहीं करते हैं। न उनका ब्रह्माजी से लेना-देना कुछ है और न और किसी से इस पर कोई विवाद होता है। उनका किसी के साथ कभी कोई विवाद नहीं होता है। उनका कभी ऐसा कुछ है ही नहीं। और ऐसी स्थिति में रहने के बावजूद भी अरे भाई देने वाले ने जिसको दिया है वह उसका दुरुपयोग भी करे तो भी उसके साथ कभी माथाफोड़ी नहीं करते, विवाद नहीं करते।

कल हमारे भाईलोग चर्चा कर रहे थे कि हमने उधर दान किया, इधर दान किया और मैं इनको कह रहा था कि भाई जहाँ दान करो वहाँ दान का सदुपयोग हो रहा है कि नहीं इसकी आप पूरी-पूरी जानकारी भी लो, पर ये निश्चित थे कि महाराज नहीं जिसको दे रहे हैं वह सेवा ही करेगा ऐसा ये भाव रख रहे थे। शिव का भी यही स्वभाव है वे देने के बाद विवाद नहीं करते। ये भी देने के बाद विवाद नहीं करते। करुणा निधान! शिव देने के बाद विवाद नहीं करते और हम देने के बाद संवाद नहीं करते। लेकिन शिवजी किसी चीज के लिए यह नहीं कहते कि मुझे यह नहीं मिला, मुझे यह नहीं मिला मुझे यह नहीं मिला। ऐसे कई भाई लोग भी होंगे। ऐसी कई माताएं-बहनें भी होगी जिसकी सासु ने एक बहू को ज्यादा दे दिया एक को कुछ नहीं दिया तो जिसको कुछ नहीं मिला उसने सेवा भी की। कई बार भाई देखो सासु का और दादी का मामला अलग ही होता है। जो बहु बेचारी मल-मूत्र साफ करती रही उसको तो एक पायजेब पकड़ा दी और जो थोड़ा पांव पर हाथ फेर देती उसको गले की सोने की चेन दी। तो जिसको चैन मिली वह अपनी देरानी जेठानी को कहती कि लो आपने खूब सेवा की सासू की फिर भी आपको पायल दी और मैंने तो कुछ भी नहीं किया, बस चलते ऐसे ही पांव के हाथ लगा दिया और मुझे चैन दी। तो जिसको पायल मिली वह कहती कोई बात नहीं आपको हार मिला आप हार जैसे बनो लेकिन मुझे पायल मिली है तो आशीर्वाद तो सारा मुझे दे गई है सासू। यह शिव कृपा है। जो प्राप्त है

उसमें प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। एक वाक्य बहुत अच्छा कहीं-कहीं जगह पढ़ने को मिलता है- ''जो प्राप्त है वह पर्याप्त है, जो प्राप्त है वह पर्याप्त है'' लेकिन इसके साथ यह भी बात होनी चाहिये कि जो प्राप्त है हम उस पर प्रसन्न हैं। प्राप्त में जो प्रसन्न है वो शिव तत्व है। प्राप्त में प्रसन्नता। तो शिवजी किसी से माथा नहीं लगाते, किसी से कोई विवाद नहीं करते। कहीं उनका यह कथन नहीं होता कि मुझे यह नहीं, वो नहीं, क्योंकि उनको कुछ जरूरत ही नहीं और उसका दूसरा कारण यह भी है कि क्योंकि यह सब दिया हुआ उनका ही है।

क्या-क्या नहीं दिया तूने हम क्या प्रमाण दें।
क्या मांगूं मैं भोले, सब कुछ तुमने जो दे दिया।
क्या-क्या नहीं दिया तूने, हम क्या प्रमाण दें।
खाली झोली लेकर आए, तुमने खुशियों से भर दिया,
क्या मांगूं मैं भोले, सब कुछ तुमने जो दे दिया।
मांगता है संसार जिससे, वो दानी मेरा भोला है।
जिसके दर पर आकर खुला, किस्मत का ताला है।
एक लोटा जल चढ़ाकर, जिसने भी तुम्हें ध्याया।
बिना मांगे ही बाबा, उसने सब कुछ है पाया।
क्या मांगूं मैं भोले, सब कुछ तुमने जो दे दिया।
महलों की चाह नहीं, ना चांदी ना सोना चाहिए।
बस आपके चरणों में, छोटा सा कोना चाहिए।
सुख-दु:ख में संभाला तुमने, हर पल साथ निभाया
हूँ, जब भी मैं गिरा भोले, तूने ही हाथ बढ़ाया।
क्या मांगूं मैं भोले, सब कुछ तुमने जो दे दिया।
अवघड़दानी नाम तुम्हारा, तुम ही हो त्रिपुरारी।
शरण में तेरी आकर, सुधर गई किस्मत मेरी।
इस जीवन की नैया को, पतवार तुम्हारी मिली।
मुरझाई हुई इस बगिया में, फिर से कली खिली।
क्या मांगूं मैं भोले, सब कुछ तुमने जो दे दिया।
बस गए हैं त्रिलोक शंभू, तेरे दान से
जहर पिया जीवन दिया इतना उदार तू
आयो शरण तिहारी भोले तार तार तूं-2
कैलाश के निवासी नमो बार-बार हूँ-2
भक्तों को कभी शिव तूने निराश नहीं किया-2
मांगा जिन्हें जो चाहा वरदान दे दिया-2
बड़ा है तेरा दायरा, बड़ा दातार तू-2
आयो शरण तिहारी भोले तार तार तूं-2
बखान क्या करूँ मैं राखों ढ़ेर का-2
शिव की भभूत में है खजाना कुबेर का-2
है गंगधार, मुक्तिद्वार ओमकार तू-2
आयो शरण तिहारी भोले तार तार तूं-2
तेरी कृपा बिना न हिले एक भी अणु-2
लेते हैं श्वास तेरी कृपा से तनु तनु-2
कहे दास एक बार मुझे निहार तू-2
आयो शरण तिहारी भोले तार तार तूं-2
कैलाश के निवासी नमो बार-बार हूँ-2

प्राणनाथ ! तो भगवान शिव भी विवादों से दूर रहते हैं तो शिव महापुराण का भी स्वरूप है विवादों का अंत करना।

शिव भक्त जीवन मुक्त होता है कृपानाथ कई लोग सोचते हैं कई लोग सोचते हैं कि जो शिव भक्त होते हैं वे तो ऐसे अपवित्र ही रहते हैं, अशुद्ध ही रहते हैं क्योंकि उनके भगवान भी ऐसे ही हैं वे शमशान में रहते हैं। शमशान में रहने वाले को शुद्ध कौन मानेगा? एक बार नारद जी ने शिवजी को पूछा कि आपको रहने को और कोई जगह नहीं मिली? आपने शमशान में जाकर अपना आसन लगाया? शिवजी कहते हैं नारद और जगह पर लोग परेशान करने आते हैं, लेकिन यहाँ पर लोग विश्राम करने आते हैं। यहाँ किसी को धरती के लिए नहीं झगड़ना है या किसी को पत्नी के लिए नहीं झगड़ना है या किसी को फैक्ट्री के लिए नहीं झगड़ना। सब झगड़े निपटाकर के कंप्लीट करके टोटल रेस्ट इसे डॉक्टर बोलते हैं ना बैड रेस्ट हैं। कृपानाथ! अपने आपको जगत के संपर्क से बचाने के लिए ठाकुरजी शिवजी अपने आपको लोक संपर्क से बचाने के लिए ....

सनातन धर्म

(अम्बा लाल सुथार, सम्पादक)

........पिछले अंक से आगे

(8) सबसे ऊँचा धर्म

सबसे ऊंचा धर्म कौनसा है? एक बार विश्व धर्म सम्मेलन में जब यह विमर्श चल रहा था कि कौनसा धर्म सबसे महान और तार्किक है, तब सनातन धर्म के एक महान संत ने कहा कि आप सभी अपने7अपने धर्म की ऊँची से ऊँची बात कह दो, उससे ऊँची बात मैं सनातन धर्म की बता दूंगा। बारी-बारी से सभी धर्मो के लोग अपने-अपने धर्म की ऊँची से ऊँची बात कहते और सनातन धर्म के वे महात्मा उससे ऊपर की बात कह देते।

अब ईसाई धर्म के सेंन्ट खड़े हुए और बोलना शुरू हुए कि हमारा धर्म सबसे महान है। ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाया जा रहा था तब भी वे ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे कि हे प्रभु! इन्हें क्षमा करना, ये बेचारे नहीं जानते कि मुझ निरपराध को फांसी पर चढ़ा रहे हैं। मतलब कि अपने दुश्मनों को, अपने प्राण लेने वालों को भी ईसाई धर्म में क्षमा कर दिया जाता हैं। इसके बाद सनातन धर्म के महात्मा खड़े हुए और कहा कि इससे आगे की बात जो सनातन धर्म में है अब आप वो सुनो-

गुजरात के एक परम विरक्त और उच्च कोटि के संत थे। वे अधिकतर समय अपने भजन-ध्यान और साधना में लीन रहते थे। उनको ईश्वर के प्रत्येक विधान पर अटूट विश्वास था। कुछ भी होता तो वे कहते- 'बधूं ही तू जाणे छे' (हे ईश्वर! सब कुछ तू ही जानता है)। एक बार कुछ चोरों ने राजा के महल में बड़ी चोरी की। राजा के सिपाही चोरों के पीछे लग गए। खुद को घिरता देख चोरों ने चालाकी की और सारा चोरी का माल चुपके से महात्मा की कुटिया में डालकर भाग गए। पांवों के निशान देखते-देखते पीछे से आए सिपाहियों ने संत की कुटिया में माल देखकर महात्मा को ही चोर समझ लिया और उन्हें बेड़ियों में जकड़कर राजा के सामने पेश कर दिया। राजा के पूछने पर कि क्या यह चोरी उन्होंने की है, महात्मा ने मुस्कुराकर कहा- 'बधूं ही तू जाणे छे।' राजा ने कहा मेरे महल से चोरी करना और माल का आपके पास पकड़ा जाना कितना बड़ा अपराध सिद्ध हो रहा है, कुछ समझते हो क्या? आपको फांसी तक हो सकती है। सही सही बताओ। महात्मा ने फिर मुस्कुराकर कहा- 'बधूं ही तू जाणे छे।' राजा ने सिपाहियों से कहा इन्हें कारागार में डाल दिया जाए। महात्मा को कारागार में बंद कर दिया गया।

यह बात चारों तरफ आग की तरह फैल गई। महात्मा कोई छोटे-मोटे साधु नहीं थे। वे बहुत उच्चकोटि के संत थे। सब जानते थे कि महाराज चोरी नहीं कर सकते, कोई न कोई षड्यंत्र है। अगले ही दिन, संत के गांव के सैकड़ों भक्तों ने आकर राजा के सामने महात्मा की पवित्रता की गवाही दी, तो राजा को अपनी भूल का अहसास हुआ। राजा ने आदरपूर्वक संत को जेल से मुक्त किया और चरणों में गिरकर क्षमा मांगी। तब भी संत ने यही कहा- 'बधूं ही तू जाणे छे।' किसी ने पूछा कि महाराज जी आपने चोरी नहीं की फिर भी आपको कारागार में बंद किया जा रहा था तो आपने अपनी निर्दोषता क्यों नहीं बताई राजा को? तब भी महात्मा मुस्कराकर बोले- 'बधूं ही तू जाणे छे।'

इस कहानी के अंत में संत ने जो गूढ़ रहस्य समझाया, वही सनातन धर्म को सर्वोच्च सिद्ध करता है। प्रायः अन्य मत, जैसे ईसाई धर्म, अपनी महानता इस बात में देखते हैं कि ईसा मसीह ने सूली पर चढ़ते समय अपने विरोधियों को क्षमा करते हुए कहा था कि हे ईश्वर! इन्हें क्षमा करना, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं (कि ये मुझ निरपराध को सजा

दे रहे हैं)। लेकिन सनातन धर्म की दृष्टि इससे कहीं अधिक गहरी और तार्किक है। सनातन के संत ने इस घटना के माध्यम से समझाया कि ईश्वर के न्याय पर अखंड विश्वास करो। जब कोई व्यक्ति स्वयं को निरपराध कहकर दूसरों को क्षमा करने का दिखावा करता है, तो वह अनजाने में ईश्वर को ही कटघरे में खड़ा कर देता है। उसका यह सोचना कि मैं निरपराध हूँ फिर भी मुझे सजा मिल रही है, यह दर्शाता है कि वह ईश्वर को अल्पज्ञानी या अन्यायी मान रहा है, जिसके राज्य में बिना अपराध के भी किसी को सजा मिल सकती है। जबकि सनातन धर्म सिखाता है कि परमात्मा के राज्य में अंधेर नहीं है। यदि आज मुझे कोई कष्ट या सजा मिल रही है, तो वह किसी और की गलती नहीं, बल्कि मेरे ही किसी पूर्व जन्म या अज्ञात कर्म का फल है। जब गुजराती संत ने कारागार में डालते समय भी कहा कि 'बधूं ही तू जाणे छे', तो उनका अर्थ यह था कि हे प्रभु! सांसारिक दृष्टि से भले ही मैंने यह चोरी न की हो, लेकिन इस जन्म या पूर्व जन्मों में मुझसे कोई न कोई ऐसा अपराध अवश्य हुआ होगा, जिसका फल आज मुझे इस रूप में मिल रहा है। वह अपराध क्या है, यह केवल आप जानते हैं। क्योंकि आपके न्याय-विधान में बिना अपराध के कोई मुझे छू भी नहीं सकता।

निष्कर्षः क्यों सनातन धर्म सबसे ऊंचा है? यह कहानी सिद्ध करती है कि सनातन धर्म किसी को सहानुभूति या बलिदान का अहंकार नहीं सिखाता। जहाँ अन्य धर्मो में व्यक्ति स्वयं को निर्दोष मानकर ईश्वर के विधान पर संदेह करता है, वहीं सनातन का संत विपरीत से विपरीत परिस्थिति में भी ईश्वर पर कोई आरोप नहीं लगाता। ईश्वर के पूर्ण न्याय, कर्मफल के अकाट्य सिद्धांत और अपनी भूलों को स्वीकार करने का यह सर्वोच्च आत्मज्ञान ही सनातन धर्म को संसार का सबसे तार्किक, न्याय संगत और सर्वोच्च धर्म सिद्ध करता है।

(9) परलोकवादः हिंदुओं के रग-रग में यह बात भरी हुई है कि जब तक मुक्ति नहीं होती तब तक जीव बार-बार जन्मता-मरता है और उसके द्वारा अच्छे -बुरे किए गए कर्मो को भोगना पड़ेगा। अच्छे कर्म का अच्छा फल और बुरे कर्म का बुरा फल मिलता है। सुख-दुःख का कारण कोई अन्य नहीं जीव स्वयं ही है। अधर्मी परलोक तथा पुनर्जन्म को कल्पना मात्र मानते हैं, लेकिन वर्तमान में ऐसी कई सच्ची घटनाएं सुनने में आती रहती है जिसमें किसी बालक को अपने पुनर्जन्म की बहुत सी बातें याद रहती है तथा उस अनुसार करने से उसके पुनर्जन्म के संबंधी भी मिल जाते हैं तथा उन्हें वह पहचान भी लेता है।

संसार में सभी लोगों में आयु, भोग, स्वभाव, जाति आदि की भिन्नता भी पूर्व कर्मो के अनुसार होती है। यदि परलोक और पुनर्जन्म को नहीं माना जाए तो महान अनर्थ हो जाएगा। मनुष्य पर किसी का नियंत्रण भी नहीं रहेगा। कोई कितना भी शक्तिशाली क्यों ना हो वह भी अपने बुरे कर्मो के फलस्वरुप एक दिन फंस ही जाता है कर्मो के जाल में। परलोक को मानने वाले कभी निषिद्ध आचरण नहीं करेंगे जिससे उनका स्वयं का तो कल्याण होगा ही साथ ही संसार में उनसे किसी को भी कष्ट नहीं होगा, जबकि परलोक को नहीं मानने वालों को कोई भय नहीं होगा वे मनमाना आचरण करके स्वयं तो पथभ्रष्ट होकर अपनी आत्मा को फंसाएंगे ही साथ ही संसार में नाना प्रकार के दुःख तथा उपद्रव फैलाएंगे।

परलोक का अर्थ मृत्यु के बाद की स्थिति से है। अगले जन्म में भले ही इसी पृथ्वी पर जन्म हो, चाहे नरक में जाना पड़े, चाहे स्वर्ग में सब परलोक ही है। जिन धर्म में परलोक को नहीं माना जाता उनमें नैतिक पतन बहुत ही अधिक होता है। हिंदू धर्म में भी जो हिंदू परलोक को मानता है उसे ही लाभ होगा सभी को नहीं। अतः प्रत्येक व्यक्ति को शास्त्रों पर विश्वास कर परलोक वाद को मानते हुए सदैव उत्तम आचरण द्वारा अपना उत्थान करना चाहिए।......लगातार अगले अंक में

8 जुलाई को आयोजित हुई न्यासी बोर्ड की मासिक बैठक

नंदगाँव। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा न्यासी बोर्ड की मासिक बैठक 8 जुलाई को प्रधान संरक्षक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशणानंदजी महाराज श्री की पावन निश्रा में एवं कार्यकारी संरक्षक पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज के सभापत्वि में अभिनव ब्रजमण्डल में आयोजित हुई जिसमें न्यासी बोर्ड के मेम्बर और आमंत्रित न्यासियों ने भाग लिया।

इस बैठक मे निम्नलिखित प्रस्ताव निर्णयात्मक विचार-विमर्श कर सर्वसम्मति से पारित किए गएः-

1. सर्वहितकारी प्रार्थना के साथ प्रधान संरक्षक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री के मार्गदर्शनात्मक उद्बोधन से बैठक का शुभारंभ हुआ।

2. कार्यकारी प्रधान संरक्षक पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज ने सभापती का दायित्व ग्रहण कर कोरम की उद्घोषणा कर बैठक की कार्यवाही प्रारंभ की।

3. गत बैठक की कार्रवाई का पठन मुख्य प्रशासनिक अधिकारी सीईओ श्री आलोकजी सिंहल ने किया। जिस पर विचार-विमर्श कर अनुमोदन किया गया।

4. श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा संचालित विभिन्न सेवा प्रकल्पों के विभाग बनाकर तत सेवा में दक्षता रखने वाले ट्रस्टियों को उक्त विभागीय समिति का प्रमुख अधिकृत करते हुए अन्य योग्य ट्रस्टी सदस्यों को मनोनीत करके एक-दो सम्बंधित कर्मचारियों को नियुक्त किया जावे। इसके लिए नीचे वर्णित समितियों का गठन किया गया है:

(क) श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा गोशाला प्रबंधन समिति

इस समिति द्वारा श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा संचालित गोशालाओं में विराजमान गोवंश के लिए घास चारा, पौष्टिक आहार, औषधि की आपूर्ति सुनिश्चित करना, गो सेवक कर्मचारियों की नियुक्तियां करना, दैनिक गोसेवा कार्य संपादन, गोष्ठ की साफ-सफाई, नवीन गोष्ठ तैयार कराने आदि गोशाला प्रबंधन की समस्त सेवाओं संपन्न करवायी जायेगी। समिति में निम्नलिखित महानुभाव सेवाएं देंगे-

पूज्य गोसंत श्री नंदरामदासजी महाराज, श्री गोधाम महातीर्थ आनंदवन पथमेड़ा

पूज्य संत श्री रामरतनजी महाराज, संरक्षक राजाराम गोशाला टेंटोडा

साधक श्री कमलसिंह जी, संरक्षक नंदीशाला गोलासन

श्री संजयजी गर्ग दिल्ली अध्यक्ष चारा समिति

श्री केवलारामजी सांचौर अध्यक्ष गोशाला संचालन समूह सांचोर चितलवाना क्षेत्र

श्री राजीवजी केजरीवाल दिल्ली, ट्रस्टी श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा

श्री देवेन्द्रजी जैन दिल्ली, ट्रस्टी श्री गोधाम पथमेड़ा

श्री कमलेश भाई थराद, ट्रस्टी श्री गोधाम पथमेड़ा

श्री हीरसिंहजी राठौड़, प्रबंधक गोशाला समूह

श्री श्रवणकुमारजी शर्मा, प्रबंधक गोसेवा मुख्यालय

श्री देवकुमारजी यादव, प्रबंधक चारा क्रय समूह

श्री भैरुसिंहजी चौहान, प्रबंधक गोसेवा समन्वय कार्यालय

श्री पुनमसिंहजी चौहान, प्रबंधक गो अभ्यारण्य मालवा

एवं श्री गोधाम पथमेड़ा गोशाला पदेन प्रबंधकगण

(ख) श्री गोधाम पथमेड़ा गोशाला निर्माण समिति

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा एवं उसके अनुग्रह में संचालित गोशालाओ के विभिन्न आवश्यक निर्माण कार्यो की जानकारी, स्वीकृति, नक्शा, एस्टीमेट आदि जांचकर उच्च्व गुणवत्तायुक्त कार्य करवाना।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा संचालित गोशालाओं के पदेन अध्यक्ष एवं महामंत्री
श्री केसारामजी सुथार ट्रस्टी, श्री गोधाम पथमेड़ा
श्री नरेंद्रकुमारजी धानोल, ट्रस्टी श्री गोधाम पथमेड़ा
श्री भागचंदजी किशनगढ़, ट्रस्टी श्री गोधाम पथमेड़ा
श्री बलदेवजी चौधरी डीसा, ट्रस्टी श्री गोधाम पथमेड़ा
श्री मांगीलालजी सुथार, ट्रस्टी श्री गोधाम पथमेड़ा
श्री रामेश्वरजी छीपा, निर्देशक निर्माण विभाग
श्री हीरसिंहजी राठौड़, प्रबंधक गोशाला समूह
श्री कैलाश जांगीड़, अभियंता निर्माण विभाग
श्री गोधाम पथमेड़ा गोशाला प्रबंधकगण

(ग) श्री गो गोपाल आराधना समिति

पूज्य संत श्री ऋषिचेतन्यजी महाराज, समन्वयक श्री गोधाम पथमेड़ा
श्री सुरेशजी राजपुरोहित मादा दिल्ली
पंडित श्री गंगाधरजी पाठक श्रीधाम वृन्दावन
पंडित श्री बालकृष्णजी कौशिक सरदारशहर
पंडित श्री ललितजी द्विवेदी सांचौर
श्री खेतेशजी प्रबंधक श्री गोवर्धननाथजी मन्दिर

(घ) श्री वेदलक्षणा गोसंर्वधन सेवा समिति

श्री अम्बा लाल जी सुथार संयोजक
डॉ. प्रेमसिंहजी चौधरी निदेशक वेदलक्षणा गो संवर्धन
डॉ. हितेशजी पुरोहित निदेशक वेदलक्षणा गो संवर्धन
श्री हीरसिंहजी राठौड प्रबंधक गोशाला समूह
डॉ. नरेंद्रजी पुरोहित प्रधान गोचिकित्सक नंदगांव
चिकित्साधिकारी श्री गोधाम आनंदवन पथमेड़ा
चिकित्साधिकारी गो अभ्यारण्य सालरिया

(ङ) श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा प्रशासनिक समिति: श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा तथा इसके अधिनस्थ संस्थाओं में वैतनिक अधिकारियों, कर्मचारियों व श्रमिकों की योग्यता एवं आवश्यकता अनुसार नियुक्तियों, उनकी दैनिक उपस्थिति, उनके सेवा कार्यो का निरीक्षण और प्रमाणीकरण करना तथा ग्राम पंचायत, पंचायत समिति, उपखंड, जिला, राज्य और केंद्र सरकार से संबंधित सभी अधिकारियों से संवाद, संपर्क, वैधानिक कार्य संपन्न कराने के लिए तथा गोमहिमा प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कराने के लिए बैठक में निर्णयात्मक विचार -विमर्श उपरांत सर्वसम्मति से कार्यकारी अध्यक्ष श्री रघुनाथसिंहजी राजपुरोहित की अध्यक्षता में प्रशासनिक समिति का गठन करते हुए निम्निलिखित महानुभावों को सदस्य मनोनित किया गया:

पूज्य महंत श्री दिनेशगिरीजी महाराज, फतेहपुर
पूज्य संत श्रीगोविन्दवल्लभदासजी महाराज, श्रीपतिधाम
पूज्य महंत श्री रविन्द्रानंदजी महाराज, सालरिया
पूज्य संत श्री सीतारामदासजी महाराज, रानीखेत
श्री अर्जुनसिंहजी राजपुरोहित, अंकलेश्वर
श्री धनराजजी चौधरी, जोधपुर
श्री ब्रह्मदत्तजी राजपुरोहित, नानरवाड़ा सिरोही
श्री बद्रीदानजी चारण, भीनमाल
श्री अम्बा लाल जी सुथार, सांचोर
श्री शिवनाथसिंहजी राजपुरोहित, बासडा धनजी
डॉ उदारामजी वैष्णव, सांचोर
श्री जसराजजी वाली, भीनमाल
श्री नरेंद्रसिंहजी, सिरोही
श्री आलोकजी सिंहल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी
श्री रणछोड़जी पुरोहित, रेवदर
श्री ओमप्रकाशजी विश्नोई, कुकावास
श्री तुलछारामजी पुरोहित, सांचोर
श्री धर्मशरणजी शर्मा, सांचोर
श्री बद्रीदानजी चारण जालोर
श्री सुरेशजी पुरोहित प्रशासनिक कार्य प्रभारी
श्री शरदजी टांक मिडिया प्रभारी
श्री कांतिप्रसादजी, सोशल मिडीया
श्री मनोज कुमार शर्मा प्रशासनिक कार्यालय
श्री अर्जुनजी पालीवाल संपर्क कार्यालय

(च) गोसेवा निधि संकलन एवं प्रबंधन समिति:

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास को गोभक्त धर्मात्माओं से प्राप्त आजीवन सदस्यता निधि, गोग्रास निधि, गोसेवा निधि, निर्माण निधि तथा श्री गोधाम पथमेड़ा द्वारा संचालित गोशालाओं को प्राप्त शासकीय अनुदान निधि एवं अन्य निधि के आय-व्यय को पारदर्शी बनाना।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा तथा अधिनस्थ संस्थाओं की वित्तिय निगरानी हेतु बैठक में निर्णयात्मक विचार-विमर्श उपरांत सर्वसम्मति से राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राकेशजी बिंदल की अध्यक्षता में गोग्रास निधि प्रबंधन समिति का गठन किया गया। यह समिति गोग्रास निधि सहित सभी प्रकार की गोसेवा निधियों का संकलन तथा संस्था को प्राप्त गुप्तदान को पारदर्शी विधि से संस्था के नियमानुसार विनियोग करेगी एवं वित्तीय पत्रावलियां का दैनिक, साप्ताहिक और मासिक निरीक्षण परीक्षण करके लिखित में स्वीकृति देने के लिए श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की सुरभि प्रज्ञा परिषद व केन्द्रीय कार्यकारिणी के निम्नलिखित पदाधिकारीयों तथा सदस्यों को अधिकृत किया गया है:

पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज, कार्यकारी प्रधान संरक्षक

पूज्य गो उपासक श्री दयानंदजी शास्त्री, केंद्रीय मार्गदर्शक

पूज्य संत श्री बलदेवदासजी महाराज, केंद्रीय संरक्षक

श्री देवारामजी जागरवाल, अध्यक्ष गो गोपाल सनातन संस्कृती महामंदिर निर्माण समिति अभिनव ब्रजमंडल

श्री ओमप्रकाशजी अग्रवाल, केंद्रीय कोषाध्यक्ष बालोतरा

श्री डूंगरसिंहजी राजपुरोहित लुधियाना

श्री मेघराजजी मोदी सांचोर

श्री मुरलीधरजी तोषनीवाल, केंद्रीय सहकोषाध्यक्ष राजसमंद

श्री सत्यनारायण जी राजपुरोहित चम्पाखेड़ी

श्री नितिनजी शर्मा जयपुर, वित्तीय सलाहकार

श्री किशोरजी राजपुरोहित सूरत

श्री आलोक जी सिंहल मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

श्री धूपसिंहजी राजपुरोहित अरणु

श्री सांवलजी राजपुरोहित बागावास

श्री सत्यनारायणजी बंसल दिल्ली

श्री नरेशजी गोयल दिल्ली

श्री मनोजजी अग्रवाल दिल्ली

श्री ओमसिंहजी राजपुरोहित दिल्ली

श्री यशपालजी गुप्ता दिल्ली

श्री राजीवजी केजरीवाल दिल्ली

श्री विशनसिंहजी सांथू दिल्ली

श्री श्रवणसिंहजी हरियाणा

श्री रमाकांतजी बेरीवाल कोलकाता

श्री गौरांगजी अग्रवाल कोलकाता

श्री ललितजी अग्रवाल अहमदाबाद

श्री श्यामजी जोडीवाल अहमदाबाद

श्री मुकेशजी चाचाण अहमदाबाद

श्री घेवरचंदजी पुरोहित सी ए अहमदाबाद

श्री अंजनीजी अग्रवाल अहमदाबाद

श्री लालसिंहजी राजपुरोहित सूरत

श्री प्रमोदजी कंसल सूरत

श्री विपिनजी जालान सूरत

श्री संदीपजी पोद्दार सूरत

श्री मालारामजी पुरोहित सूरत

गोवत्स श्री विठ्ठलकृष्णजी मुम्बई

श्री प्रतापजी राजपुरोहित मुम्बई

श्री हाजाजी राजगुरु मुम्बई

श्री किरणजी चिरपटीया मुम्बई

श्री नटवरलालजी पुरोहित मुम्बई

श्री नरेन्द्रजी धानोल मुम्बई

श्री जयंतीलालजी मुम्बई

श्री चंपालालजी सायला भाग्यनगर

श्री मुरलीधरजी पलोड़ भाग्यनगर

श्री लक्ष्मणसिंहजी चम्पाखेडी भाग्यनगर

श्री नकुलजी रेवतड़ा भाग्यनगर

श्री हीरालालजी बागरा बैंगलोर

श्री प्रदीपजी कैलाश नगर बैंगलोर

श्री जबरसिंहजी पुर बैंगलोर
श्री महेन्द्रजी घासेडी बैंगलोर
श्री विनोदजी बैंगलोर
श्री नरपतसिंहजी रेवतड़ा चैन्नई
श्री ललितजी रोपसी चैन्नई
श्री भरतजी बासडा धनजी चैन्नई
श्री अखिलेशजी पटेल प्रबंधक वित्त कार्यालय
श्री योगेशकुमारजी सह प्रबंधक वित्त कार्यालय

(छ) वैदिक गो उत्पाद सेवा समिति: श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की गोशालाओं में विराजमान गोमाताओं से प्राप्त पंचगव्य उत्पाद तथा वैदिक गो उत्पाद फाऊंडेशन द्वारा गोपालक किसानों से संकलित गो दुग्धान्न एवं गोकृषि अन्न के परिष्करण, विनिर्माण तथा वेदलक्षणा गो उत्पादों का विपणन करने हेतु बैठक में सर्वसम्मति से कार्य समिति का गठन करते हुए निम्नलिखित विशेषज्ञ महानुभावों को मनोनीत किया गया है-

पूज्य संत श्री नर्मदाशरणजी महाराज संयोजक
गोवत्स श्री विठ्ठलकृष्णजी मुम्बई संरक्षक
श्री विपिनजी जालान सूरत चौयरमेन
श्री ब्रह्मदत्तजी पुरोहित नानरवाड़ा प्रबंध निदेशक
श्री नितिनजी शर्मा जयपुर, वित्तीय सलाहकार
श्री विभोरजी कौशिक दिल्ली वाइस चेयरमेन
श्री आलोक जी सिंहल पथमेड़ा निदेशक
श्री मालारामजी राजपुरोहित मणोरा निदेशक
श्री सुनील जी जागेटिया भीलवाड़ा निदेशक
श्री कुणालजी राजपुरोहित आबुरोड निदेशक
श्री मनोज जी अग्रवाल दिल्ली अतिरिक्त निदेशक
श्री यशपालजी गुप्ता दिल्ली अतिरिक्त निदेशक
श्री अमितजी शर्मा अहमदाबाद अतिरिक्त निदेशक
श्री घेवरचंदजी बिलड़ अहमदाबाद अतिरिक्त निदेशक
श्री बलरामजी चौधरी डीसा कृषि सलाहकार
श्री मोहन भाई जाधव कृषि सलाहकार
श्री मनोजजी शर्मा चिकित्साधिकारी पंचगव्यावैद
श्री मानवेन्द्रसिंहजी प्रबंधक वैदिक गो उत्पाद फाउंडेशन
श्री नरसिंहजी प्रभारी वेदलक्षणा गौरस भण्डार

(ज) गोकृषि परिवहन सेवा समिति

श्री महादेवभाईजी निरीक्षक
ठाकुर हरिसिंहजी देवड़ा अध्यक्ष
श्री मोहनभाई जाधव निदेशक
श्री तुलसीप्रसादजी चौधरी संयोजक
श्री हुक्मसिंहजी राजपुरोहित क्षेत्राधिकारी
श्री दीपकजी मेनारीया विभाग प्रबंधक
श्री हार्दिकभाई अहीर नेपियर उत्पादक

5. बैठक में चातुर्मास अवधि में पचास से अधिक सदस्यों वाले नगरों-महानगरों के आजीवन सदस्यों को प्रयासपूर्वक एक साथ बुलाकर एक ही दिन में उनकी बैठक कर वहाँ की समितियें गठित करने का निर्णय लिया गया। चातुर्मास अवधि में विद्वत संगोष्ठी, कथा व्यास संगोष्ठी, संत सम्मेलन, उद्योगपति संगोष्ठी, गोपालक किसान संगोष्ठी, शिक्षक, अधिवक्ता, सी ए संगोष्ठी एवं गोशाला सम्मेलन करने पर भी सहमति बनी। विद्वत संगोष्ठी की जिम्मेदारी गो उपासक श्री दयानंदजी शास्त्री के सानिध्य में पंडित गंगाधरजी पाठक एवं डॉ बालकृष्णजी कौशिक को प्रदान की गई। कथा व्यास संगोष्ठी हेतु गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज को जिम्मेदारी प्रदान की गयी। उद्योगपति संगोष्ठी हेतु श्री राकेशजी बिंदल के नेतृत्व में एक समिति बनाने पर सहमति बनी।

6. सभापति महोदय ने न्यास एवं न्यास के अनुग्रह निग्रह में संचालित संस्थाओं के लेखों के वैधानिक अंकेक्षण करवाने के विषय पर चर्चा आरंभ करते हुए सभा को सूचित किया कि न्यास की ओर से श्री आलोक जी सिंहल ने मैसर्स भवानी शर्मा एंड कंपनी चार्टर्ड अकाउंटेंट्स नई दिल्ली के प्रतिनिधियों से श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास के वित्त वर्ष 2025-26 एवं 2026-27 के वैधानिक अंकेक्षण का दायित्व स्वीकार करने के संबंध में

विचार जानना चाहा जिस पर उन्होंने सकारात्मक प्रत्युत्तर दिया और बताया कि यदि न्यास उन्हें वैधानिक अंकेक्षक का दायित्व देते हैं तो उन्हें स्वीकार है। सभा में इस प्रस्ताव पर विचार किए जाने पर सभी ने इस पर सहमति जताते हुए निम्न प्रस्ताव पारित किया कि मैसर्स भवानी शर्मा एंड कंपनी, चार्टर्ड अकाउंटेंट्स, 6202, ब्लॉक - 1, गली नंबर 2, देव नगर, करोल बाग नई दिल्ली-110 005 को न्यास एवं न्यास के अनुग्रह निग्रह में संचालित संस्थाओं के वित्त वर्ष 2025-26 और 2026-27 के लिए अंकेक्षक उस पारिश्रमिक पर वैधानिक अंकेक्षक नियुक्त किया जाता है जो परस्पर सहमति से निर्धारित किया जा सकेगा।

7. बैंकों में न्यास के विभिन्न खातों के परिचालन से संबंधित भी प्रस्ताव पारित किये गये।

8. श्री गोपाल सनातन संस्कृति महामंदिर निर्माण समिति में दो नये गोभक्तों श्री राजकुमार जी अग्रवाल जमशेदपुर एवं श्री सुभाषजी जोड़ीवाल अहमदाबाद को सम्मिलित करने पर भी आम सहमति बनी।

9. न्यासी बोर्ड में श्री संजयजी गर्ग दिल्ली तथा श्री धनराजजी चौधरी जोधपुर को विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में सम्मिलित करने पर सहमति अनी।ण

सभापति महोदय के सारगर्भित संबोधन के बाद गोसंकीर्तन के साथ सभा को पूर्णता प्राप्त हुई। बैठक का संचालन कार्यकारी अध्यक्ष श्री रघुनाथसिंहजी राजपुरोहित ने किया।

परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री संतों एवं गोभक्तों के संग 20 जुलाई की रात्रि को नंदगाँव से श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन पथमेड़ा पधारे । प्रातः श्री गोधाम की परिक्रमा कर श्री कामधेनु महाशक्तिपीठ में दर्शन, पूजन उपरान्त अभिनव ब्रजमण्डल श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नंदगाँव के लिये पुनः प्रस्थान किया।

परम पूज्य जगदगुरु शंकराचार्य शारदापीठ, द्वारका का प्रथम बार श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा में हुआ मंगल आगमन

पथमेड़ा, 26 जुलाई। परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री की पावन प्रेरणा एवं श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के भाव भरे आमंत्रण पर अनन्त श्रीविभूषित पश्चिमाम्नाय सामवेदीय द्वारका शारदापीठाधीश्वर परम महाभाग जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज का दिनांक 29 जुलाई से अभिनव ब्रजमण्डल श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नंदगांव में आरम्भ होन वाले श्री सुरभि हरिहर चातुर्मास आराधना महोत्सव में सम्मिलित होने हेतु श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की पवित्र और गोसेवा से सिंचित भूमि पर प्रथम बार आगमन हुआ। जगद्गुरु के श्री गोधाम पथमेड़ा के मुख्य द्वार पर पहुँचने पर पूज्य संतों और गोभक्तों, ग्वालबालों ने किया भव्य स्वागत। पथमेड़ा में रात्रि विश्राम 27 जुलाई को मध्यान्ह नंदगांव पधारे जहाँ साधु संतों, गोभक्तों और ग्वालबालों ने भव्य स्वागत किया।

यहाँ पहुँचने से पहले जगद्गुरु द्वारका से 25 जुलाई को साबरमती तट, भाटगांव, गांधीनगर में श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा स्थापित एवं संचालित श्री सुरभि शक्तिपीठ पधारे। यहाँ गोमाता का पूजन अर्चन कर उपस्थित गोभक्तों को अपने दिव्य दर्शन एवं आशीर्वचन से अनुगृहित किया। 25 जुलाई की रात्रि विश्राम डीसा में किया। अगले दिन पूज्य श्री डीसा से श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा स्थापित एवं संचालित श्री राजाराम गोशाला टेटोड़ा पधारे। यहाँ गोदर्शन, गोपूजन के बाद विश्व की सबसे बड़ी श्री महावीर हनुमान नंदीशाला गोलासन पहुँचे जहाँ नंदी पूजन, राम दरबार और गोलासन हनुमान जी के दर्शन किये।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास का गठन 2017 में हुआ था। पहली कार्यकारिणी 17 जनवरी 2018 को बनी, तब से 2024 तक की राष्ट्रीय कार्यकारिणियों की सूचियें नीचे दी जा रही है।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी – 17-01-2018

क्र.	गोभक्त सदस्य का नाम	निवासी	दायित्व
1	पू. श्री गोपालशरणदेवाचार्य जी महाराज	श्री गोलोकधाम, दिल्ली	अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
2	पू. श्री राजेन्द्रदासदेवाचार्य जी महाराज	श्रीधाम वृन्दावन	राष्ट्रीय अध्यक्ष
3	श्री सुरेश जी राजपुरोहित (IPS)	जयपुर	केंद्रीय मार्गदर्शक
4	पूज्य महंत श्री दिनेशगिरि जी महाराज	फतेहपुर	केंद्रीय गोसंरक्षण प्रभारी
5	पूज्य श्री रघुनाथभारती जी महाराज	सिन्धरी	केंद्रीय गोसंवर्धन प्रभारी
6	पूज्य श्री सुमन सुलभ जी महाराज	नंदगांव	पंचगव्य उत्पाद प्रभारी
7	गोवत्स श्रीविठ्ठल कृष्णजी	नंदगांव	गोमहिमा प्रचार प्रभारी
8	श्री राजकुमार जी अग्रवाल	जमशेदपुर	कार्यकारी अध्यक्ष
9	श्री रघुनाथ सिंह जी राजपुरोहित	पाली	प्रधान सचिव
10	श्री सुशील कुमार जी ओझा	कोलकाता	राष्ट्रीय महामंत्री
11	श्री मूंगर सिंह जी	जोधपुर-लुधियाना	उपाध्यक्ष
12	श्री आनन्द जी अग्रवाल	अहमदाबाद	कोषाध्यक्ष
13	श्री देवाराम जी जागरवाल	बैंगलोर	गोग्रास सेवा प्रभारी
14	श्री रमाकांत जी बेरिवाल	कोलकाता	संयोजक
15	श्री सुखराज जी	बैंगलोर	सह-कोषाध्यक्ष
16	श्री सुभाष जी जोड़ीवाल	अहमदाबाद	संगठन प्रभारी
17	श्री कुलदीप जी राजपुरोहित	कोलकाता	संपर्क प्रभारी
18	श्री किशोर सिंह जी राजपुरोहित	सूरत	उपाध्यक्ष
19	श्री सुनील जी जागेटिया	भीलवाड़ा	केंद्रीय मंत्री
20	श्री हरिशंकर जी	बैंगलोर	संयोजक
21	श्री मुकेश जी चाचाण	अहमदाबाद	संयोजक
22	श्री भोमाराम जी	मुंबई	लेखा प्रभारी
23	श्री धनराज जी चौधरी	जोधपुर	प्रशासन प्रभारी
24	श्री केवलराम जी	सांचौर	समन्वय प्रभारी
25	श्री हरिओम जी तायल	दिल्ली	संयोजक
26	श्री प्रताप जी	मुंबई	संयोजक
27	श्री ऋषि प्रकाश जी आदि	मुंबई	गोचिकित्सा
28	श्री घनश्याम जी	कोलकाता	संयोजक
29	श्री कैलाश जी	सूरत	संयोजक
30	श्री राजेश जी	मुंबई	संयोजक
31	श्री मनोज जी	दिल्ली	संयोजक
32	श्री विनोद जी	अहमदाबाद	संयोजक
33	श्री पवन जी	जयपुर	संयोजक
34	श्री दिनेश जी	कोलकाता	संयोजक
35	श्री अशोक जी	सूरत	संयोजक
36	श्री महेश जी	मुंबई	संयोजक
37	श्री गोपाल जी	दिल्ली	संयोजक
38	श्री रमेश जी	अहमदाबाद	संयोजक
39	श्री नरेश जी	जयपुर	संयोजक
40	श्री कमलेश जी	कोलकाता	संयोजक
41	श्री सुरेन्द्र जी	सूरत	संयोजक
42	श्री राजेन्द्र जी	मुंबई	संयोजक
43	श्री मोहन जी	दिल्ली	संयोजक
44	श्री दीपक जी	अहमदाबाद	संयोजक
45	श्री संजय जी	जयपुर	संयोजक
46	श्री अजय जी	कोलकाता	संयोजक
47	श्री विजय जी	सूरत	संयोजक
48	श्री अनिल जी	मुंबई	संयोजक
49	श्री अरविन्द जी	दिल्ली	संयोजक
50	श्री प्रवीण जी	अहमदाबाद	संयोजक
51	श्री सुशील जी	जयपुर	संयोजक
52	श्री राकेश जी	कोलकाता	संयोजक
53	श्री उमेश जी	सूरत	संयोजक
54	श्री नितिन जी	मुंबई	संयोजक
55	श्री धर्मेन्द्र जी	दिल्ली	संयोजक
56	श्री जितेन्द्र जी	अहमदाबाद	संयोजक
57	श्री लोकेश जी	जयपुर	संयोजक
58	श्री हेमन्त जी	कोलकाता	संयोजक
59	श्री कपिल जी	सूरत	संयोजक
60	श्री रोहित जी	मुंबई	संयोजक
61	श्री विकास जी	दिल्ली	संयोजक
62	श्री गौरव जी	अहमदाबाद	संयोजक
63	श्री योगेश जी	जयपुर	संयोजक
64	श्री नवीन जी	कोलकाता	संयोजक

केन्द्रीय कार्यकारिणी (17-01-2020)

क्र.	गोभक्त सदस्य का नाम	निवासी	दायित्व
1	श्री राजकुमारजी अग्रवाल	जमशेदपुर	राष्ट्रीय अध्यक्ष
2	श्री रघुनाथसिंहजी राजपुरोहित	पाली	राष्ट्रीय प्रधान सचिव
3	श्री ओमप्रकाशजी गर्ग	बालोतरा	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
4	श्री प्रतापजी राजगुरु	मुंबई	राष्ट्रीय महामंत्री
5	श्री जगदीशजी राठी	मुंबई	सह कोषाध्यक्ष
6	श्री देवारामजी जागरवाल	बैंगलोर	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
7	श्री सुखराजजी रायगुरु	बैंगलोर	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
8	श्री रमाकांतजी बेरिवाल	कोलकाता	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
9	श्री आनंदजी अग्रवाल	अहमदाबाद	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
10	श्री मूंगरसिंहजी राजगुरु	लुधधियाना	केन्द्रीय गोव्रति खाद्य प्रमुख
11	श्री केलारामजी जोशी	सांचोर	केन्द्रीय समन्वयक
12	श्री धनराजजी चौधरी	जोधपुर	केन्द्रीय कार्यालय प्रमुख
13	श्री नितिनजी शर्मा	जयपुर	केन्द्रीय वित्त लेखा प्रमुख
14	श्री राकेशजी कंसल	सूरत	संयोजक सूरत महानगर
15	श्री सुभाषजी जोड़ीवाल	अहमदाबाद	संयोजक कर्णावती
16	श्री अशोकजी कोठारी	भीलवाड़ा	संयोजक मेवाड़ प्रदेश
17	श्री हरिशंकरजी रेवतड़ा	बैंगलोर	संयोजक कर्नाटक प्रदेश
18	श्री किशोरसिंहजी नेतरा	सूरत	संयोजक गुजरात राज्य
19	श्री शिवनाथसिंहजी जागरवाल	चेन्नई	संयोजक चेन्नई महानगर
20	श्री हरिओमजी तायल	दिल्ली	संयोजक दिल्ली महानगर
21	श्री अर्जुनसिंहजी राजपुरोहित	अंकलेश्वर	संयोजक म. गुजरात
22	श्री मनमोहनजी जाजोदिया	गोरखपुर	संयोजक उत्तरप्रदेश
23	श्री सुखदेवसिंहजी पांछलोड़	बैंगलोर	संयोजक बैंगलोर महानगर
24	श्री खंगारजी खिरोड़ी	मुंबई	संयोजक दक्षिण मुंबई
25	श्री गुमानसिंहजी नून	चेन्नई	संयोजक तमिलनाडु प्रदेश
26	श्री नेमारामजी राजगुरु	छत्राल	संयोजक उत्तर गुजरात
27	श्री चंपालालजी सायला	हैदराबाद	संयोजक तेलंगाना प्रदेश
28	श्री फूलारामजी भादरड़ा	चेन्नई	संयोजक दक्षिण भारत
29	श्री गंगाप्रसादजी बासनी	जोधपुर	संयोजक मारवाड़ प्रदेश
30	श्री शिवशंकरजी शर्मा	जयपुर	संयोजक जयपुर महानगर
31	श्री जमतराजजी रेवतड़ा	नेल्लोर	संयोजक आंध्रप्रदेश
32	श्री बाबूलालजी दांडा	बोइसर	संयोजक उत्तर मुंबई
33	श्री सविनयजी अग्रवाल	लुधियाना	संयोजक पंजाब प्रदेश
34	श्री बालमुकुंदजी अग्रवाल	कर्णावती	सह संयोजक कर्णावती
35	श्री राजूजी सामराणी	मुंबई	सह संयोजक उत्तर मुंबई
36	श्री हजरारामजी राजगुरु	मुंबई	सह संयोजक दक्षिण मुंबई
37	श्री चतरजी बाकलिया	मुंबई	सह संयोजक दक्षिण मुंबई
38	श्री नरेश जी तांतड़ा	मुम्बई	प्रचार प्रमुख दक्षिण मुंबई
39	श्री संदीपजी पोद्दार	सूरत	सह संयोजक सूरत
40	श्री राजकुमारजी अग्रवाल	कर्णावती	सह संयोजक कर्णावती
41	श्री अनिलजी अग्रवाल	जयपुर	सह संयोजक जयपुर
42	श्री कैलाशजी राजपुरोहित	उदयपुर	सह संयोजक मेवाड़
43	श्री अशोककुमारजी सायला	चेन्नई	सह संयोजक चेन्नई
44	श्री सम्पतरामजी माहेश्वरी	उदयपुर	सह संयोजक मेवाड़
45	श्री नरेशजी गोयल	दिल्ली	सह संयोजक दिल्ली
46	श्री कल्पेशजी बिश्नोई	कोलकाता	सह संयोजक कोलकाता
47	श्री गजरामजी रिणवा	सिरोही	सह संयोजक दक्षिण भारत
48	श्री आलोकजी सिंहल	बाड़मेर	सचिव एवं केन्द्रीय संपर्क प्रमुख
49	श्री रामसिंहजी डिगारी	बैंगलोर	सह संयोजक बैंगलोर
50	श्री यशपालजी गुप्ता	दिल्ली	सह संयोजक दिल्ली
51	श्री ठाकरारामजी लुंबावास	मैसूर	सह संयोजक कर्नाटक
52	श्री चंपालालजी राजपुरोहित	अंकलेश्वर	सह संयोजक म.गुज.
53	श्री जसवंतजी व्यास	बाली	सह संयोजक मारवाड़
54	श्री आत्मारामजी सिसोदिया	सांचोर	संयोजक सांचोर नगर
55	श्री अमृतजी धुड़वा	कलोल	सह संयोजक उ. गुजरात
56	श्री जबरारामजी वाटेरा	कर्णावती	संगठन प्रमुख
57	श्री जबरसिंहजी राव	सांचोर	सह संयोजक सांचोर नगर
58	श्री नागजीरामजी चौधरी	पथमेडा	स. संयोजक सांचोर नगर
59	श्री मनोजकुमारजी दासवानी	सूरत	सह संयोजक सूरत
60	श्री सुरजनारामजी बिश्नोई	रणोदर	संयोजक जालोर क्षेत्र
61	श्री ऋषिप्रकाशजी एवं रोहितजी	मुंबई	गो कृषिअन्न एवं घास
62	श्री मेघराजजी मोदी	सांचोर	गोशाला परिसर सेवा प्रमुख
63	श्री हिन्दूसिंहजी चौहान	दूठवा	सह संयोजक जालोर क्षेत्र
64	श्री दिनेश कुमारजी दांतिया	सांचोर	सह संयोजक मारवाड़

केन्द्रीय कार्यकारिणी (17-02-2022)

क्र.	गोभक्त सदस्य का नाम	निवासी	दायित्व
1	श्री राजकुमारजी अग्रवाल	जमशेदपुर	राष्ट्रीय अध्यक्ष
2	श्री रघुनाथसिंहजी राजपुरोहित	पाली	राष्ट्रीय प्रधान सचिव
3	श्री ओमप्रकाशजी गर्ग	बालोतरा	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
4	श्री प्रतापजी राजगुरु	मुंबई	राष्ट्रीय महामंत्री
5	श्री देवारामजी जागरवाल	बैंगलोर	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
6	श्री रमाकांतजी बेरिवाल	कोलकाता	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
7	श्री आनन्दजी अग्रवाल	अहमदाबाद	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
8	श्री मूंगरसिंहजी राजगुरु	लुधियाना	केंद्रीय गोव्रती खाद्य प्रमुख
9	श्री केवलारामजी जोशी	सांचोर	केंद्रीय गोशाला समन्वयक
10	श्री धनराजजी चौधरी	जोधपुर	केंद्रीय कार्यालय प्रमुख

क्र.	गोभक्त सदस्य का नाम	निवासी	दायित्व
11	श्री नितिनजी शर्मा	जयपुर	केंद्रीय वित्त लेखा प्रमुख
12	श्री सुभाषजी जोड़ीवाल	अहमदाबाद	संयोजक कर्णावती
13	श्री किशोरसिंहजी नेतरा	सूरत	संयोजक गुजरात राज्य
14	श्री शिवनाथसिंहजी जागरवाल	चेन्नई	संयोजक चेन्नई महानगर
15	श्री हरिओमजी तायल	दिल्ली	संयोजक दिल्ली महानगर
16	श्री अर्जुनसिंहजी राजपुरोहित	अंकलेश्वर	संयोजक म गुजरात
17	श्री मनमोहनजी जाजोदिया	गोरखपुर	संयोजक उत्तरप्रदेश
18	श्री सुखदेवसिंहजी पांछलोड़ा	बैंगलोर	समन्वयक बैंगलोर
19	श्री खंगारजी खिरोड़ी	मुंबई	संयोजक दक्षिण मुंबई
20	श्री गुमानसिंहजी नून	चेन्नई	संयोजक तमिलनाडु
21	श्री नेमारामजी राजगुरु	छत्राल	संयोजक उत्तर गुजरात
22	श्री हजारीरामजी राजगुरु	मुंबई	समन्वयक दक्षिण मुंबई
23	श्री छतरजी बाफलिया	मुंबई	सह संयोजक दक्षिण मुंबई
24	श्री नरेशजी तांतड़ा	मुंबई	प्रचार प्रमुख दक्षिण मुंबई
25	श्री संदीपजी पोद्दार	सूरत	सह संयोजक सूरत महानगर
26	श्री कैलाशजी राजपुरोहित	उदयपुर	सह संयोजक मेवाड़
27	श्री नरेशजी गोयल	दिल्ली	सह संयोजक दिल्ली
28	श्री कल्पेशजी बिश्नोई	कोलकाता	सह संयोजक कोलकाता
29	श्री श्रवणसिंहजी राव	सांचोर	राष्ट्रीय सहसंपर्क प्रमुख
30	श्री आलोकजी सिंहल	बाड़मेर	सचिव एवं केंद्रीय संपर्क प्रमुख
31	श्री यशपालजी गुप्ता	दिल्ली	सह संयोजक दिल्ली
32	श्री जबराजी वाटेरा	कर्णावती	संगठन प्रमुख
33	श्री नागजीरामजी चौधरी	पथमेडा	सह संयोजक सांचोर
34	श्री रोहितजी सक्सेना	मुंबई	गोकृषि अन्न एवं चारा उत्पादन
35	श्री बालकिशनजी अग्रवाल	सूरत	संयोजक सूरत नगर
36	श्री तेजसजी बहेती	औरंगाबाद	केंद्रीय वित्त सह प्रमुख
37	श्री प्रकाशजी रायपुरिया	देहरादून	संयोजक उत्तराखंड

क्र.	गोभक्त सदस्य का नाम	निवासी	दायित्व
38	श्री मोहनभाई जाधव	डीसा	समन्वयक उत्तर गुजरात
39	श्री भोपालसिंहजी बकरा	चेन्नई	संयोजक चेन्नई महानगर
40	श्री विशनसिंहजी सांथू	दिल्ली	समन्वयक दिल्ली
41	श्री सुरेशजी माली	रतनपुरा	सह समन्वयक मुंबई
42	श्री अम्बा लाल जी सुथार	कारोल	प्रबंध न्यासी पथमेडा
43	श्री नैनसिंहजी रमणिया	हैदराबाद	सह संयोजक तेलंगाना
44	श्री श्रवणजी नारवा	दिल्ली	सह संयोजक दिल्ली
45	श्री सत्यनारायणजी चंपाखेड़ी	मुंबई	गोग्रास संकलन प्रमुख
46	श्री महावीरप्रसादजी अग्रवाल	कोलकाता	गोसेवा प्रेरणा प्रमुख
47	श्री हीरालालजी बागरा	बैंगलोर	संयोजक बैंगलोर
48	श्री मुकेशजी चाचाण	अहमदाबाद	संयोजक कर्णावती
49	श्री चौनसिंहजी दोरनाड़ी	जयपुर	संपर्क प्रमुख
50	श्री कुलदीपजी बरवा	कोलकाता	संयोजक पूर्वोत्तर
51	श्री जबराजी पूर	बैंगलोर	सह संयोजक बैंगलोर
52	श्री अंशुलजी जिंदल	चंडीगढ़	संयोजक पंजाब
53	श्री मुरलीमनोहरजी पलोड़	हैदराबाद	संयोजक तेलंगाना
54	श्री बह्मदत्तजी पुरोहित	नानरवाड़ा	प्रबंध न्यासी नंदगांव
55	श्री लक्ष्मणजी अरोड़ा	जोधपुर	संयोजक जोधपुर
56	श्री राधाकिशनजी	किशनसर	गोग्रास सह प्रमुख
57	श्री गोपालजी बावड़ी	सूरत	समन्वयक सूरत
58	श्री अर्जुनजी भादरडा	चेन्नई	सह संयोजक चैन्नई
59	श्री जगदीशजी सिरोला	बैंगलोर	संपर्क प्रमुख द.भारत
60	श्री भेरारामजी सिद्दी	मुंबई	संपर्क प्रमुख मुम्बई
61	श्री थानारामजी चौधरी	पथमेडा	सह संपर्क सह प्रमुख
62	श्री डुंगरारामजी पुरोहित	सांचोर	कार्यालय प्रवक्ता
63	डॉ. उदारामजी वैष्णव	सांचोर	कार्यालय सह प्रवक्ता
64	श्री चंपाभाई पटेल	बनासकांठा	सह संयोजक उ. गुजरात

केन्द्रीय कार्यकारिणी (17-02-2022)

क्र.	गोभक्त सदस्य का नाम	निवासी	दायित्व
	पू. श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज	श्रीराम मन्दिर संगरिया	केन्द्रीय मार्गदर्शक
	पू. गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज	जोधपुर	कार्यकारी प्रधान संरक्षक
	पू.गोसंत श्री नन्दरामदासजी महाराज	पथमेड़ा	केन्द्रीय संयोजक
	पू. संत श्री अनंतचैतन्यजी महाराज	पथमेड़ा	गोमहिमा प्रचारक
	पू. संत श्री मुकुन्दप्रकाशजी महाराज	पथमेड़ा	केन्द्रीय संरक्षक
1	श्री प्रदीपजी बंसल	मुम्बई	केन्द्रीय अध्यक्ष
2	श्री रघुनाथसिंहजी राजपुरोहित	पाली	कार्यकारी अध्यक्ष
3	श्री अर्जुनसिंहजी राजपुरोहित	तिवरी	केन्द्रीय महामंत्री
4	श्री ओमप्रकाशजी गर्ग	बालोतरा	केन्द्रीय कोषाध्यक्ष

क्र.	गोभक्त सदस्य का नाम	निवासी	दायित्व
5	श्री केवलारामजी पुरोहित	पालड़ी	केन्द्रीय संगठन मंत्री
6	श्री बलवन्तजी पुरोहित	अणखोल	केन्द्रीय प्रचार मंत्री
7	श्री नरेन्द्रजी राजपुरोहित	धानोल	केन्द्रीय आयोजन मंत्री
8	श्री धनराजजी चौधरी	जोधपुर	गोसेवा महानिर्देशक
9	श्री अम्बा लाल जी सुथार	कारोला	केन्द्रीय निर्देशक
10	श्री ब्रह्मदत्तजी पुरोहित	नानरवाड़ा	सयुंक्त निर्देशक
11	श्री आलोकजी सिंहल	बाड़मेर	मुख्य प्रशासनिक अधिकारी
12	डॉ. विरेन्द्रकुमारजी गर्ग	दिल्ली	वरिष्ठ उपाध्यक्ष
13	श्री मेघजी मोदी	मेड़ा जागीर	क्षेत्रीय निर्देशक गोधाम पथमेड़ा
14	श्री किशनलालजी जोडीवाल	अहमदाबाद	चैयरमैन
15	श्री केशारामजी सुथार	सिद्धेश्वर	उपाध्यक्ष

क्र.	गोभक्त सदस्य का नाम	निवासी	दायित्व
16	श्री खंगारजी राजपुरोहित	खिरोड़ी	उपाध्यक्ष
17	श्री हरिशंकरजी राजपुरोहित	रेवतड़ा	उपाध्यक्ष
18	श्री मुरलीमनोहरजी पलोड़	हैदराबाद	उपाध्यक्ष
19	श्री छगनजी बाहेती	जोधपुर	उपाध्यक्ष
20	श्री गोरांगजी अग्रवाल	कोलकाता	उपाध्यक्ष
21	श्री नारायणसिंहजी राजपुरोहित	बासड़ा धनजी	उपाध्यक्ष
22	श्री ओमप्रकाशजी मंत्री	राजसमन्द	सहकोषाध्यक्ष
23	श्री सत्यनारायणजी बंसल	दिल्ली	सचिव
24	श्री लालसिंहजी राजपुरोहित	रणधीसर	सचिव
25	श्री ललितजी अग्रवाल	अहमदाबाद	सचिव
26	श्री अशुंलजी जिंदल	पंचकुला	सचिव
27	श्री जेठुसिंहजी राजपुरोहित	बासनी मनणा	सचिव
28	श्री प्रकाशचंदजी राजपुरोहित	रायपुरीया	सचिव
29	श्री डॉ. उदारामजी वैष्णव	सांचोर	निर्देशक पथमेड़ा
30	श्री डूंगरारामजी पुरोहित	बिछावाड़ी	राष्ट्रीय प्रवक्ता
31	श्री राजकुमारजी अग्रवाल	अहमदाबाद	सदस्य
32	श्री प्रवीणकुमारजी पुरोहित	पालड़ी	सदस्य
33	श्री गोपालभाई शाह	नाडियाद	सदस्य
34	श्री स्वतंत्रजी शर्मा	जम्मु	सदस्य
35	श्री नरेशजी गोयल	दिल्ली	सदस्य
36	श्री यशपालजी गुप्ता	दिल्ली	सदस्य
37	श्री शिवनाथसिंहजी राजपुरोहित	बासड़ा धनजी	सदस्य
38	श्री मनोजजी अग्रवाल	दिल्ली	सदस्य
39	श्री नरपतसिंहजी राजपुरोहित	बासनी	सदस्य
40	श्री थानारामजी चौधरी	पथमेड़ा	सदस्य
41	श्री मोहनभाई जादव	डीसा	सदस्य
42	श्री देवेन्द्रजी जैन	दिल्ली	सदस्य
43	श्री हीरालालजी राजपुरोहित	बागरा	सदस्य
44	श्री लक्ष्मणसिंहजी राजपुरोहित	चम्पाखेड़ी	सदस्य
45	श्री संजयजी गर्ग	दिल्ली	सदस्य
46	श्री शंकरजी राजगोर	आमली	सदस्य
47	श्री आलोकजी जाग्वायन	दिल्ली	सदस्य
48	श्री अजयप्रकाशजी गुप्ता	सीतापुर	सदस्य
49	श्री जबरारामजी राजपुरोहित	पुर	सदस्य
50	श्री अर्जुनजी राजपुरोहित	भादरड़ा	सदस्य
51	श्री जसराजजी सिद्धप	वाली	सदस्य
52	श्री लक्ष्मणसिंहजी राजपुरोहित	अराबा	सदस्य
53	श्री श्रवणकुमारजी राजपुरोहित	वराडा	निर्देशक सिरोही
54	श्री नरपतसिंहजी राजपुरोहित	आलासण	सदस्य
55	श्री जोगराजजी राजपुरोहित	सांकरणा	सदस्य
56	श्री जयसिंहजी राजपुरोहित	बैरठ	निर्देशक कलापुरा
57	श्री अंजनीकुमारजी गुप्ता	अहमदाबाद	सदस्य
58	श्री चेलाभाई पटेल	शिहोरी	सदस्य
59	श्री घनश्यामजी मुंदडा	जसवंतगढ	सदस्य
60	श्री अजयजी शर्मा	सूरत	सदस्य
61	श्री जगदीशजी राजपुरोहित	सिरोला की ढाणी	सदस्य
62	श्री महेन्द्रजी राजपुरोहित	घासेडी	सदस्य
63	श्री दिनेशजी पुरोहित	दांतिया	सदस्य
64	श्री घेवरचंदजी राजपुरोहित	बीलड	सदस्य
65	श्री घनश्यामजी राजपुरोहित	चितलवाना	सदस्य
66	श्री बलरामजी जाट	डीसा	सदस्य
67	श्री ध्रुवजी सयानी	मुम्बई	सदस्य
68	श्री अमरारामजी माली	सांचोर	सदस्य
69	श्री विपिनजी जालान	सूरत	सदस्य

28 जुलाई को आयोजित हुई केन्द्रीय कार्यकारिणी और सुरभि प्रज्ञा परिषद की त्रैमासिक बैठक

नंदगाँव। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की केन्द्रीय कार्यकारिणी और सुरभि प्रज्ञा परिषद की त्रैमासिक बैठक 28 जुलाई को प्रधान संरक्षक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशणानंदजी महाराज श्री की पावन निश्रा में अनन्त श्रीविभूषित पश्चिमाम्नाय सामवेदीय द्वारका शारदापीठाधीश्वर परम महाभाग जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज की अध्यक्षता एवं कार्यकारी संरक्षक पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज के सभापत्वि में अभिनव ब्रजमण्डल में आयोजित हुई जिसमें इन दोनों सदनों के पदाधिकारीगणों एवं न्यासियों ने भाग लिया।

इस बैठक मे निम्नलिखित प्रस्ताव निर्णयात्मक विचार-विमर्श कर सर्वसम्मति से पारित किए गए:-

1. 8 जुलाई को न्यासी बोर्ड की बैठक में गठित गोशाला प्रबंधन समिति, गोशाला निर्माण समिति, गो गोपाल आराधना समिति, प्रशासनिक समिति, वेदलक्षणा गो संवर्धन समिति, गोसेवा निधि संकलन एवं प्रबंधन समिति, वैदिक गोउत्पाद सेवा समिति, गोकृषि परिवहन सेवा समिति का अनुमोदन किया गया।

2. सब आजीवन न्यासियों को चातुर्मास अवधि में कम से कम एक बार बुलाने पर सहमति बनी। इस पर चर्चा कर यह निर्णय किया कि एक नगर/महानगर के सभी न्यासियों को एक ही दिन बुलाये जावे। इस हेतु उस नगर के कार्यकताओं को जिम्मेदारी दी गई। उस दिन सभी गोपूजन, पादुका पूजन, गोचारण करे और सभी की परम श्रद्धेय गोऋषि जी महाराज के सानिध्य में एक बैठक का आयोजन करवाकर उस नगर के न्यासियों की एक समिति का गठन किया जावे जो अपने-अपने क्षेत्र में गोसेवा की विभिन्न गतिविधियों का संचालन करे।

परम श्रद्धेय गोऋषि जी महाराजश्री ने अपने आशीर्वचन में कहा कि हम सभी न्यासियों से अपेक्षा करते हैं कि वे गोव्रत का पालन कर रहे होंगे, अगर कुछ कमी रह गई है तो उसमें सुधार करें। हम ही अगर गोगव्यों का उपयोग अपने दैनिक जीवन में नहीं करेंगे तो दूसरों को क्या सीख देंगे। सुरभि प्रज्ञा परिषद और केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्य तो पक्के तौर पर गोव्रति बने।

महाराज श्री ने फरमाया कि श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा का लक्ष्य है घर-घर गोपालन हो तथा खेत-खेत में गोकृषि अन्न का उत्पादन हो। इसी से गोसेवा होगी। यह तभी होगा जब गोपालकों को गोदुग्ध का अधिक मूल्य मिले और कृषकों को गोकृषि अन्न का अधिक मूल्य मिले। गोपालकों की आय बढ़ेगी तो ही वे गोपालन करेंगे। इसकी शुरूआत हमें स्वयं से करनी होगी। हमें अपने परिवार में गोगव्यों और गोकृषि अन्न का ही उपयोग करना है। इससे हमें स्वास्थ्य लाभ होगा और गोसेवा भी होगी। इसी लक्ष्य की पूर्ति हेतु जालोर और सिरोही जिलों में नंदीशाला की स्थापना की है और अब बाड़मेर व जैसलमेर जिलों में भी नंदीशालाओं की स्थापना करनी है। गोपालक के सामने एक ही बड़ी समस्या है कि वो गाय तो घर में रखे, मगर उसके नर गोवंश का क्या होगा? इसलिये हम उनके नर गोवंश को नंदीशालाओं में लेना चाहते हैं।

महाराजश्री ने सभी से आग्रह किया कि गोसेवा में अधिक समय देकर उदाहरण प्रस्तुत करें, गोमाता की सुन्दर सेवा से ठाकुरजी को प्रसन्नता होगी। जिस प्रकार गोमाता हमें शुद्ध और पवित्र आहार दे रही है उसी प्रकार गोमाता को भी हमें विषमुक्त आहार देने के लिये हमें अपनी संस्थाओं में तथा अपने खेतों में रासायनिक खादों से रहित चारा लगाना है। निकट चारा होगा तो किराया कम लगने से सस्ता भी मिलेगा।

पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज ने सभापति के रूप में अपने आशीर्वचन में कहा कि सभी न्यासी और कार्यकर्ता भाव से जुड़े इसके लिये उन्हें यहाँ तक लाना है। हम अपने-अपने नगर/क्षेत्र के लिये वर्ष में एक अवसर चुनें जो कथा के बहाने हो, किसी उत्सव के बहाने हो जब सभी न्यासियों को यहाँ लेकर पधारें। इससे सभी को प्रत्यक्ष गोसेवा के दर्शन होंगे और गोमाता से लगाव बढ़ेगा।

मैं यह देख रहा हूँ कि मेरे सहित अधिकतम न्यासी केवल बैठक में आते हैं, गोसेवा में इससे अधिक कुछ नहीं कर पा रहे हैं। हमें कोई न कोई जम्मेदारी लेकर गोसेवा कार्य को करना चाहिये। महाराजश्री ने इसी अपेक्षा से ही हमें चुना है।

पूज्यश्री ने कहा कि श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की स्थापना ही रचनात्मक गोसेवा से हुई है। आन्दोलन का भी अपना महत्व है लेकिन रचनात्मक गोसेवा करने वाले नहीं होंगे तो आंदोलन के बाद गोसेवा करेगा कौन? गोसेवा करके ही हम गोमाता को बचा सकते हैं। अंत में सर्वहितकारी प्रार्थना के साथ बैठक पूर्ण की गई।

पथमेड़ा की किसी भी गोशाला में पहली बार होगा जगद्गुरु शंकराचार्य का चातुर्मास, लाखों संत और गोभक्त होंगे सम्मिलित

नंदगाँव, 29 जुलाई। विश्व प्रसिद्ध गोसेवा संस्थान श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा में पहली बार अनन्त श्रीविभूषित पश्चिमाम्नाय सामवेदीय द्वारका शारदापीठाधीश्वर परम महाभाग जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज के सान्निध्य में सुरभि हरिहर चातुर्मास आराधना महोत्सव का भव्य आयोजन आज 29 जुलाई को परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराज की पावन निश्रा में हजारों वेदलक्षणा गोमाताओं के मध्य में गुरु पूर्णिमा के मंगलमय अवसर से व्यास पूजन के साथ आरम्भ हुआ। चतुर्मास व्रत का आयोजन 26 सितंबर तक रखा गया है। लगभग दो माह तक चलने वाले इस विराट धार्मिक आयोजन में देशभर से लाखों गोभक्तों, संत-महात्माओं एवं श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना है। पथमेड़ा गोधाम के प्रशासनिक अधिकारी श्री आलोक सिंहल ने बताया कि गोधाम के संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री की पावन प्रेरणा से आयोजित हो रहा यह महोत्सव सहस्रों गोमाताओं की पावन उपस्थिति में अभिनव ब्रजमंडल मनोरमा गोलोकतीर्थ अर्बुदारण्य की दिव्य धरा पर संपन्न हो रहा है। उन्होंने बताया कि यह आयोजन धार्मिक, आध्यात्मिक और गोसंवर्धन की दृष्टि से ऐतिहासिक महत्व का होगा। चातुर्मास के दौरान श्रीमद्भागवत कथा, श्रीरामचरितमानस कथा, नानी बाई का मायरा, श्री शिव महापुराण कथा, श्री हरिहर भक्तमाल कथा, गो भक्तमाल कथा सहित कुल सात दिव्य कथाओं तथा 11 विशिष्ठ उत्सवों का आयोजन किया जाएगा। इसके साथ ही विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक उत्सव, भजन-कीर्तन, संत प्रवचन तथा प्रतिदिन गो अनुष्ठान आयोजित होंगे। इस विराट आयोजन में देशभर के अनेक प्रतिष्ठित संत-महात्मा एवं धर्माचार्य भी अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराएंगे।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के किसी भी प्रकल्प में जगद्गुरु शंकराचार्य का पहली बार चातुर्मात व्रत हो रहा है। इसलिये इस आयोजन में समस्त गोभक्त कार्यकर्ताओं और सनातन धर्मावलम्बियों को अधिकाधिक संख्या में पधार कर धर्म और गोसेवा का लाभ लेना चाहिये।

श्री गोधम महातीर्थ पथमेड़ा में गुरु पूर्णिमा पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

नंदगांव/पथमेड़ा 29 जुलाई।

गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ नंदगाँव और श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन पथमेड़ा में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब। दोनों गोधामों में गुरु पूर्णिमा पर हुए विशेष आयोजन।

मुख्य कार्यक्रम आयोजित हुआ श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ नंदगाँव में

दोनों ही गोसेवा प्रकल्पों में संतों के सानिध्य में गोभक्तों द्वारा हर्षोल्लास से मनाया गया गुरु पूर्णिमा महोत्सव। संतों की सीख- गोसेवा ही सर्वोच्च गुरु सेवा व गुरु दक्षिणा।

गुरु पूर्णिमा पर परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद महाराजश्री की पावन प्रेरणा से अभिनव ब्रजमण्डल श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ नंदगांव में श्री सुरभि हरिहर चातुर्मास आराधना महोत्सव का भव्य और दिव्य शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम श्रद्धा,

भक्ति, वैदिक मंत्रोच्चार के बीच हुआ। हजारों गोभक्त और संत महात्मा पहुंचे। सनातन धर्म, सनातन संस्कृति और गोसेवा के प्रति आस्था जताई। महोत्सव में प.पू. द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री सदानंद सरस्वती जी महाराज ने आदि शंकराचार्य की पादुकाओं का विधिवत पूजन किया।

प्रातः 7 से 9 बजे तक न्यास के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राकेश बिंदल, वरिष्ठ ट्रस्टी श्री देवाराम जी जागरवाल, महामंत्री श्री अर्जुनसिंह तिंवारी और सैंकड़ों गोभक्त श्रद्धालुओं ने हरिहर पूजन, गुरु पादुका पूजन संपन्न किया। पूजन में सैकड़ों चातुर्मास व्रती, वानप्रस्थ साधक, संत-महात्मा शामिल हुए। संतों ने भगवान गोपालजी के साथ प.श्रद्धेय गोऋषि जी महाराजश्री के सानिध्य में गोचारण उत्सव में गोमाताओं को लड्डु प्रसाद अर्पित कर गोसेवा का संदेश दिया।

भक्तों को आशीर्वचन में प.पू.जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज ने कहा कि गुरु का कोई रंग, रूप, आकार नहीं होता। गुरु परब्रह्म, परमात्मा का स्वरूप है। जो गुरु की शरण में आता है, उसके जीवन में प्राप्त करने योग्य कुछ भी शेष नहीं रहता।

प. श्रद्धेय गोऋषिजी महाराज ने गोभक्तों को आशीर्वचन में कहा कि गोसेवा, गोपूजन और गोसंरक्षण मानव जीवन की पूर्णता का आधार है। प्रत्येक सनातनी परिवार को फिर से गोपालन अपनाना चाहिये। इस अवसर पर गोसमृद्धि ग्राम पालड़ी (सांचोर) से पहुँचे गोभक्तों ने गुरु चरण पादुकाओं का पूजन किया तथा गोभण्डारे के लिये 251 क्विंटल अन्न तथा धर्मनिधि समर्पित की। श्री गोधाम आनन्दवन पथमेड़ा में पू.गोसंत श्री नंदरामदासजी महाराज ने गुरु दत्त चौकी पर व्यास पादुका पूजन किया।

वेदव्यास जी ही सबके गुरु है- प.पू. जगद्गुरु शंकराचार्य

नंदगाँव, 29 जुलाई। गुरु पूर्णिमा के परम पवित्र अवसर पर प.पू. जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारका शारदा पीठाधीश्वर श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज ने उपस्थित सनातन जन समुदाय को अपने आशीर्वचन में कहा कि वेदव्यास जी ही सबके गुरु हैं और रहेंगे क्योंकि वे चिरंजीवी हैं। व्यासपीठ पर कोई नहीं बैठता, वे ही बैठते हैं। इसलिये व्यासपीठ के पवित्रता की बात बार-बार कही जाती है। व्यासपीठ पर बैठने वाला पवित्र होना चाहिये, उसके मुखारविन्द से पवित्र वाणी निकलनी चाहिये। मनुष्य जैसा शरीर दिखने पर भी गुरु निर्गुण निराकार होते हैं। गुरु जाति, वर्ण व्यवस्था से ऊपर है। हमारे गुरु कैसे हैं? गुरु ईश्वर स्वरूप ही है। उनका न कोई आदि समझ सकता और न कोई अंत समझ सकता है। गुरु को समझना यानी गुरु ही हो जाना। गुरु के हाथ-पांव नहीं हैं। गुरु का जन्म नहीं होता है न मृत्यु ही होती है। गुरु का न नाम होता है, न सूत्र होता है और न वर्ण होता है।

धर्म परिवर्तन की बात करने वालों के लिये पूज्य जगद्गुरु ने कहा कि जाति और धर्म अपने माता पिता से आता है। जिस प्रकार केले के पौधे पर केला ही लगेगा और जब वह सड़ेगा तो यही कहेंगे कि केला सड़ गया है, वो आम होकर नहीं सड़ेगा। उसी प्रकार जो व्यक्ति जिस धर्म में जन्म लेगा वो उसी धर्म में ही मरेगा, धर्म का परिवर्तन नहीं होता है। हमने मान लिया कि मैं अमुक धर्म से परिवर्तन कर अमुक धर्म में आ गया, तो आपके मानने से धर्म का परिवर्तन नहीं होता। उन्होंने कहा हम धर्म का पालन कर, गोमाता की सेवा कर भारत को विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठित करें, यही आज मंगल कमना करते हैं।

हिन्दी मासिक पत्रिका ''कामधेनु कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा'' के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार, मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

श्री सुरभ्यै नमः

सुरभि हरिहर चातुर्मास में होने वाले दैनिक कार्यक्रम

सुरभि हरिहर महापूजन
प्रातः 07 बजे से

परम पूज्य शंकराचार्यजी की पावन सन्निधि में
श्री जगद्गुरुजी की पादुका पूजन
प्रातः 09:00 बजे से

माण्डूक्य उपनिषद् एवं गौड़पादीय कारिका पर स्वाध्याय
प्रातः 10 से 12:00 बजे तक

हरिहर कथा सत्संग
मध्याह्नः 1:30 बजे से 04:30 बजे तक

गो गोवर्धन आरती एंव हरिनाम संकीर्तन
सांयः 07:30 बजे से

वेदलक्षणा गोमहिमा धर्मोपदेश
प. पू. जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी
श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज
प्रतिदिन सांयः 4:30 से 06:00 बजे तक

हरिहर कथा सत्संग

श्री मद् भागवत कथा — पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज
29 जुलाई से 05 अगस्त तक

नानी बाई का मायरा — गोवत्स श्री दिव्यांशुजी
06 अगस्त से 10 अगस्त तक

श्री राम कथा — पूज्य श्री दयानंदजी शास्त्री
11 अगस्त से 18 अगस्त तक

श्री हरिहर भक्तमाल — पूज्य श्री गौरदासजी महाराज
19 अगस्त से 27 अगस्त तक

श्री गोभक्त माल कथा — पूज्य श्री भरतशरणजी महाराज
29 अगस्त से 04 सितम्बर तक

श्री शिव–महापुराण कथा — पंडित श्री किशोरचन्द्रजी
05 सितम्बर से 11 सितम्बर तक

श्रीमद् भागवत कथा — प. पू. जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज
19 सितम्बर से 25 सितम्बर तक

लाईव प्रसारण

Shri Godham Mahateerth Pathmeda

कुल पृष्ठ: 36
अगस्त 2026

प्रकाशन तिथि : 01 अगस्त, 2026
कामधेनु कल्याण 20 रुपए

RNI Reg. No.- RAJHIN/2022/17167
Postal Reg. No.- RJ/SRO/9681/2025-2027

चातुर्मास्यव्रतानुष्ठान

चातुर्मास्यं यतीनाञ्च यः कारयति धर्मवित् । स फलं लभते सम्यक् राजसूयाश्वमेधयो ।।

(दिनांक 29 जुलाई 2026 से 26 सितम्बर 2026 पर्यन्त)

पावन सान्निध्य
अनंत श्रीविभूषित पश्चिमाम्नाय सामवेदीय,
द्वारका शारदापीठाधीश्वर
प. पू. जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी
श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज

वेदलक्षणा
श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा

नित्योत्सव

रुद्राभिषेक
प्रातः 07 बजे से 09 बजे तक

वेदान्त पाठ
प्रातः 10 बजे से 12:00 बजे तक

नित्य प्रवचन
सायं: 05 बजे से 06:30 बजे तक

विशिष्ठोत्सव

-: वि.सं. 2083 आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा	दिनांक : 29 जुलाई 2026	★ गुरु-व्यास पूजा, चातुर्मास्य प्रारम्भ, गुरु पूर्णिमा
-: वि.सं. 2083 श्रावण अमावस्या	दिनांक : 12 अगस्त 2026	★ हरियाली अमावस्या
-: वि.सं. 2083 श्रावण शुक्ल तृतीया	दिनांक : 15 अगस्त 2026	★ स्वतंत्रता दिवस
-: वि.सं. 2083 श्रावण् शुक्ल सप्तमी	दिनांक : 19 अगस्त 2026	★ गोस्वामी तुलसीदास जयंती
-: वि.सं. 2083 श्रावण् शुक्ल पूर्णिमा	दिनांक : 28 अगस्त 2026	★ संस्कृत दिवस, श्रावणी उपाकर्म
-: वि.सं. 2083 भाद्रपद कृष्ण अष्ठमी	दिनांक : 04 सितंबर 2026	★ श्रीकृष्ण जन्माष्ठमी
-: वि.सं. 2083 भाद्रपद शुक्ल द्वितीया	दिनांक : 13 सितंबर 2026	★ श्रीवराह जयंती
-: वि.सं. 2083 भाद्रपद शुक्ल तृतीया	दिनांक : 14 सितंबर 2026	★ श्रीगणेश चतुर्थी (हरितालिका)
-: वि.सं. 2083 भाद्रपद शुक्ल अष्ठमी	दिनांक : 19 सितंबर 2026	★ श्रीराधा अष्ठमी
-: वि.सं. 2083 भाद्रपद शुक्ल चर्तुदशी	दिनांक : 25 सितंबर 2026	★ अनन्त चतुर्दशी
-: वि.सं. 2083 भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा	दिनांक : 26 सितंबर 2026	★ चातुर्मास पूर्णाहुति महोत्सव

इस अमूल्य अवसर पर आप अपने परिवार एंव इष्ठ मित्रों के साथ उपस्थित रहते हुए, पूज्या गोमाता एंव अनन्तश्री विभूषित जगतगुरू शंकराचार्य महाराजश्री के दिव्य दर्शन व सत्संग एंव पावन सानिध्य का परम लाभ प्राप्त करें ।